RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-10, अंक-05, हिन्दी (मासिक), मई 2023, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस

ब्रह्माकुमारीज़: राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सात दिवसीय एजेंडा मीटिंग आयोजित

बैठक में मंचासीन वरिष्ठ दीदी व दादी।

सकारात्मक बदलाव का वर्ष

थीम पर सालभर चलेंगे देश-विदेश में कार्यक्रम

बैठक में देश-विदेश से कार्यकारिणी सदस्यों ने लिया भाग

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का स्थापना काल से ही मुख्य उद्देश्य वसुधैव कुटुम्बकम्, विश्व शांति, एकता, सौहार्द्र और भारतीय पुरातन आदि देवी-देवता सनातन संस्कृति का संदेश जन-जन को देना, राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा देकर जीवन जीने की कला का विकास करना रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में हर साल एक थीम तय करके कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्तमान में विश्व में चारों ओर बने तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए संस्थान द्वारा इस वर्ष के लिए **सकारात्मक बदलाव का वर्ष (पॉजीटिव चैंज ऑफ द इयर)** थीम तय की गई है। इसके तहत 140 देशों के सेवाकेंद्रों पर कार्यक्रम किए जाएंगे।

यह निर्णय अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में 2 अप्रैल से 8 अप्रैल तक आयोजित सात दिवसीय एजेंडा मीटिंग में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने लिया। बैठक में सभी 20 प्रभागों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय संयोजक, मुख्यालय संयोजक, मैनेजमेंट व कोर कमेटी के सदस्य, रिट्रीट सेंटर्स की डायरेक्टर, विदेशों में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व कर रहीं वरिष्ठ बहनों ने भी भाग लिया। बैठक में विशेष रूप से मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी मौजूद रहीं। दो सत्रों में चली बैठक में सभी प्रभागों के पदाधिकारियों ने सालभर में हुई सेवाओं की जानकारी वीडियो प्रजेंटेशन के माध्यम से दी। साथ ही भविष्य की कार्ययोजना को विस्तार से बताया। वर्ष 2022 में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर एक वर्षीय देशव्यापी अभियान के तहत हुई सेवाओं की जानकारी भी दी गई।

कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने बताया कि वर्ष 2022 में ब्रह्माकुमारीज़ के देशभर में स्थित पांच हजार सेवाकेंद्रों के माध्यम से सालभर में 55 हजार कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके माध्यम से तीन करोड़ लोगों तक भारत की पुरातन संस्कृति आध्यात्म, राजयोग मेडिटेशन, देशभक्ति, यौगिक खेती, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और नशामुक्ति आदि का संदेश दिया गया। इनमें सबसे ज्यादा रिकार्ड कार्यक्रम धार्मिक प्रभाग, मेडिकल प्रभाग और कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित किए गए।

2000 वरिष्ठ पदाधिकारी देश-विदेश से पहुंचे

75 सूत्रीय एजेंडे के तहत हुआ विचार-विमर्श

140 देशों में नई थीम पर होंगे कार्यक्रम

07 दिन चली बैठक, सेवाओं पर किया मंथन-चिंतन

20 प्रभागों के पदाधिकारियों ने भी लिया भाग

इन कार्यों पर भी रहेगा जोर

पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण, किसान दिवस, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत मिशन, देशभक्ति, सर्वधर्म सम्मेलन, संत सम्मेलन, मूल्यनिष्ठ मीडिया के साथ वैश्विक शांति, एकता, भाईचारा बढ़ाने के लिए सामाजिक सेवाओं को गति दी जाएगी।

तीन साल चलेगा नशा मुक्त भारत अभियान

नशामुक्त भारत अभियान तीन साल तक चलाया जाएगा। अभियान के सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं और देशभर में इसे लेकर ब्रह्माकुमार भाई-बहनों में उत्साह का माहौल बना हुआ है।

बैठक में उपस्थित देश-विदेश से आए पदाधिकारी।

जल जन अभियान को देंगे गति

ब्रह्माकुमारीज़ व जल शक्ति मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे जल जन अभियान को गति देने के लिए सभी मिलकर प्रयास करेंगे। लोगों को जल संरक्षण के लिए जागरूक किया जाएगा। जलाशयों के जीर्णोद्धार के प्रयास किए जाएंगे।

यौगिक खेती को बनाएंगे जन-जन की खेती

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की ओर से तय किया गया कि वर्ष 2023 में ज्यादा से ज्यादा किसानों को यौगिक खेती से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। ताकि रासायनिक खेती से उत्पन्न अनाज के दुष्प्रभावों से बच सकें।

ब्रह्माकुमारीज़ राजकोट का अभिनव प्रयोग...

जीवन बचाओ अभियान

से टूटती सांसों की डोर थामने का प्रयास

अब तक हजारों लोगों में जगाई जीने की आस

शिव आमंत्रण, राजकोट/गुजरात।

जीवन है अनमोल, समझो इसका मोल। जीवन ईश्वर का दिया वह अमूल्य वरदान है जो हमें सौगात के रूप में मिला है। जरूरत है तो इस वरदान को खुशी-खुशी, उमंग-उत्साह, सार्थक और उपयोगी बनाकर यादगार रूप में जिया जाए। भागदौड़ भरी जिंदगी में हताशा, निराशा, अवसाद, हीनभावना, चिंता और तनाव से गुजर रहे लोगों को इससे उबारने और उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा कर जीवन जीने की कला का विकास करने के उद्देश्य से ब्रह्माकुमारीज़ राजकोट सबजोन की ओर से सितंबर-2022 से जीवन बचाओ अभियान चलाया जा रहा है। अभियान से जुड़कर आज हजारों लोगों को जीवन में नई रोशनी मिली है। इसके तहत अब तक स्कूल-कॉलेज व एसोसिएशन में 35 कार्यक्रम से दस हजार लोगों को कवर किया गया है।

35
कार्यक्रम स्कूल-कॉलेज, एसोसिएशन में

ये तीन प्रतिज्ञाएं सभी से कराईं

जीवन से कभी **थकना नहीं**

जीवन से कभी **हारना नहीं**

जीवन से कभी **मूंझना नहीं**

10
हजार विद्यार्थी व लोगों को किया प्रेरित

यहां चलाया गया अभियान

अभियान के तहत राजकोट शहर और आसपास के गांवों के स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल और एसोसिएशन में सेमीनार आयोजित किए गए। इनमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने और राजयोग ध्यान सीखने के लिए प्रेरित किया।

प्रोजेक्ट का उद्देश्य

मानव जीवन के महत्व को बताना

छोटी-छोटी बातों के कारण उलझ जाते, मूंझ जाते.. उसमें से बाहर निकालना

मन की गलत सोच में परिवर्तन लाना

सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं

तनाव के चलते और धैर्यता की कमी के कारण समाज में तेजी से बढ़ रही खुदकुशी (सुसाइड) की प्रवृत्ति को रोकने के लिए जीवन बचाओ अभियान की शुरुआत की गई है। इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। लोगों की दुआएं और शुभप्रेरणा अभियान को सफल बनाने और बीके भाई-बहनों को नया करने के लिए लगातार प्रोत्साहित कर रही हैं।

- राजयोगिनी बीके भारती दीदी, निदेशिका, गुजरात जोन (जीवन बचाओ अभियान की निर्देशिका)

कई विद्यार्थी तनाव से निकल आए

जीवन बचाओ अभियान के तहत जब हमारी टीम स्कूल-कॉलेजों में पहुंची तो विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएं जानकार बेहद खुशी हुई। सेमीनार के बाद जो विद्यार्थी वर्षों से किसी समस्या या परेशानी से गुजर रहे थे उन्हें उसका समाधान मिल गया। जीवन के प्रति नए दृष्टिकोण का विकास हुआ। कई लोग डिप्रेशन से बाहर निकल आए। राजकोट क्षेत्र में यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

- राजयोगिनी बीके अंजू दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

समाजहित में नेक पहल

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाया जा रहा जीवन बचाओ अभियान समाजहित में बहुत ही सराहनीय पहल है। आज युवाओं को सबसे ज्यादा सकारात्मक प्रेरणा और मोटिवेशन की जरूरत है। यदि उन्हें समय पर सही दिशा और मार्गदर्शन मिल जाए तो वह गलत रास्ते पर जाने से बच जाते हैं। आज समाज में ऐसे सकारात्मक अभियानों को चलाने की बेहद आवश्यकता है। मोटिवेशन से ही बदलाव संभव है।

- राजू भार्गव, पुलिस कमिश्नर, राजकोट, गुजरात

महिलाओं की आंतरिक शक्तियों को जगाने की विश्वव्यापी पहल

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

संयुक्त राष्ट्र महिला आयोग और ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अगस्त-सितंबर 2021 में शिव शक्ति लीडरशिप इनीशिएटिव इंटरनेशनल प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। इसमें मुख्य तीन आध्यात्मिक सिद्धांतों को शामिल किया है-सहयोगात्मक, करुणामय और सशक्त। प्रोजेक्ट का उद्देश्य महिलाओं में उभरती हुई आंतरिक शक्तियों का सुरक्षित माहौल में विकास करना, उन्हें प्रेरित करके शक्ति नेतृत्व के सही अर्थ द्वारा स्वयं और समाज के परिवर्तन में लगाना है। पूरे विश्व में विभिन्न देशों में ब्रह्माकुमारी बहनों की टीम बनी हुई है और प्रत्येक टीम का एक फोकल पॉइंट पर्सन नियुक्त किया गया है।

21 बहनें भारत और नेपाल की टीम में जुड़ीं-

भारत और नेपाल की टीम में 21 बीके बहनें जुड़ी हैं। इनकी फोकल पॉइंट पर्सन मुख्यालय शान्तिवन की डॉ. बीके सुनीता दीदी हैं। भारत में यह प्रोजेक्ट संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके डॉ. निर्मला दीदी के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा है। इसमें हर महीने प्रत्येक देश (भारत, उत्तरी अमेरिका, यूएसए और कनाडा, कैरेबियन, लैटिन अमेरिका और ब्राजील, यूरोप और यूके, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, रशिया, मिडल ईस्ट आदि) के फोकल पॉइंट पर्सन की ऑनलाइन मीटिंग आयोजित की जाती है। मीटिंग में स्व उन्नति और सेवा के लिए मंथन-चिंतन कर नई-नई विधियां इजाद की जाती हैं। फिर वहीं विधि प्रत्येक फोकल पर्सन अपने देश में लागू करते हैं। शिवशक्ति के ऑनलाइन और स्थानीय (भारत और नेपाल) स्नेह मिलन में लायंस क्लब, इनर व्हील क्लब से लेकर अन्य कई देश की जानीं-मानीं महिला संस्थाओं की पदाधिकारियों को आमंत्रित किया जाता है।

मेडिटेशन में इन स्मृतियों को दिलाते हैं याद...

मेडिटेशन के दौरान सभी को एक प्रेरणादायी स्व निरीक्षण कराया जाता है, जिससे नारी शक्ति को अपने अनादि स्वरूप (प्रेम, निर्भयता, स्वतंत्रता, पवित्रता, दैवी आदि स्वरूप) को पुनः प्राप्त करने के लिए कॉमेंट्री कराई जाती है। साथ ही अपने पारंपरिक स्वरूप के रूढ़िवाद वृत्तियों से स्वतंत्र, अपने आधुनिक स्वरूप में प्रतिशोध की भावना से मुक्त, आतंरिक आत्मिक शक्ति स्वरूप की स्थिति से स्वयं के परिवर्तन से परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर, पुनः अपने खोए हुए अनादि स्वरूप को पाने की, नारी के शक्ति स्वरूप की सुखद आतंरिक यात्रा कराई जाती है।

मैं शिव शक्ति हूं...

शिव शक्ति लीडरशिप इनीशिएटिव अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट

नारी के चार स्वरूप

- अनादि स्वरूप
- शक्ति स्वरूप
- पारंपरिक स्वरूप
- आधुनिक स्वरूप

ऑनलाइन मीटिंग अब तक भारत व नेपाल की हुईं

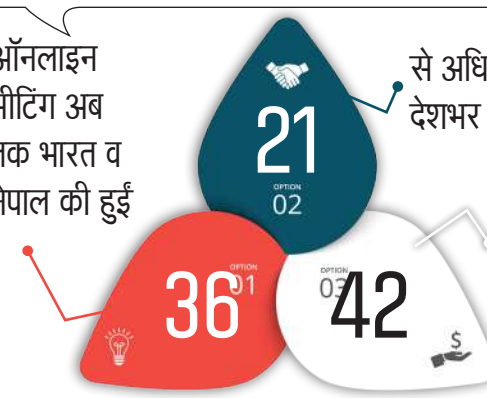

से अधिक कार्यक्रम देशभर में आयोजित

सेवाकेंद्रों से बहनों जुड़ीं

यहां हुए मेगा इवेंट

- वूमेन एंटरप्रेनर्स ऑफ कर्नाटका, बैंगलुरु
- माहेश्वरी महिला मंडल, बैंगलुरु और विराटनगर, नेपाल
- इनरव्हील क्लब, काठमांडू, नेपाल और सिरसा, हरियाणा
- महिला बचत और ऋण सहायक इतहरि नेपाल
- पारादीप फास्फेट लिमिटेड की लेडीज क्लब, ओड़िशा
- लेडीस क्लब, हैवी वाटर प्लांट, रावतभाटा, राजस्थान

प्रतिभागियों को बैठाया जाता है ग्रुप में

प्रोजेक्ट के तहत होने वाले कार्यक्रम में महिलाओं के अलग-अलग ग्रुप बनाकर बैठाया जाता है। प्रत्येक ग्रुप को एक यूनिक नाम- ब्लसफुल, पावरफुल, पीसफुल, हैप्पीनेस, लॉफुल आदि दिया जाता है। प्रत्येक ग्रुप में टीम लीडर के रूप में एक ब्रह्माकुमारी बहन होती हैं। उन्हें मैं शिव शक्ति हूं की टैगलाइन का पट्टा पहनाया जाता है। दो घंटे के इस स्नेह मिलन में 200 प्रतिभागी तक भाग ले सकते हैं। अंत में सभी को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का मौका दिया जाता है। वर्कशॉप में महिलाओं को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करें, मजबूत-सशक्त कैसे बनें, अपनी पॉवर को पहचानें आदि बातों पर मोटिवेट किया जाता है।

अवार्ड- देशभर में वूमन्स लायंस क्लब के लिए की गईं सेवाओं के लिए शिव शक्ति लीडरशिप को मोटिवेशनल अवार्ड से नवाजा गया है।

प्रोजेक्ट का उद्देश्य

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं को एक मित्रतापूर्ण और सुरक्षित माहौल में अपने आतंरिक शक्ति स्वरूप का विकास करना। साथ ही व्यक्तिगत प्रेरणादायक अनुभव एक-दूसरे से सांझा करना, ताकि वे आज के चुनौतीपूर्ण समय में शिवशक्ति के अर्थ को समझते हुए यथार्थ रूप से स्वयं को सशक्त कर सकें। नारी स्वयं की शक्ति (दिव्य ऊर्चा) को उभारें और विकसित करें। अपने कार्यस्थल पर इन्हीं प्रेरणाओं से अपने और दूसरों के जीवन को सार्थक करना। भावनाओं को व्यक्त करने का यह एक मंच है। इसमें व्याख्यान की जगह अनुभवों का आदान-प्रदान किया जाता है।

एक-एक ग्रुप को ब्रह्माकुमारी बहनें करतीं हैं गाइड, नारी शक्ति एक-दूसरे के अनुभवों को करतीं हैं सांझा

महिलाओं को मिल रही है सकारात्मक प्रेरणा

इस प्रोजेक्ट में हम महिलाओं से उनके जीवन के अनुभव सांझा करने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि उन अनुभवों का लाभ दूसरी महिलाओं को भी मिल सके। प्रोग्राम में अलग-अलग ग्रुप बनाकर एक शिव शक्ति के रूप में ब्रह्माकुमारी बहन को ग्रुप लीडर के रूप में शामिल करते हैं जो उस ग्रुप को लीड करतीं हैं। इससे कई महिलाओं को जीवन में आगे बढ़ने की नई प्रेरणा मिली है। उनमें आत्मविश्वास जागा है।

- डॉ. बीके सुनीता दीदी, फोकल पाइंट पर्सन, भारत और नेपाल रीजन, शिव शक्ति लीडरशिप इनीशिएटिव अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट।

ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान प्रैक्टिकल, राजयोग बदल देता है जिंदगी

शख्सियत

राजयोग मेडिटेशन के प्रयोग.... खुरई के बीके शिवकुमार की बदली जिंदगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। बचपन से ही आध्यात्म के प्रति विशेष लगाव और झुकाव रहा। जीवन में अनेक परिस्थितियों और संघर्षों के बाद भी कभी खुद को कमजोर नहीं पड़ने दिया। मुझे महसूस होता था कि कोई अदृश्य शक्ति है जो हर पल, हर क्षण मदद कर रही है। इस दौरान कई दिव्य आत्माओं का साक्षात्कार भी हुआ। लेकिन जीवन में जो तलाश थी वह अधूरी ही थी। राजयोग का ज्ञान लेने के बाद जीवन की तलाश पूरी हो गई। यह कहना है खुरई, मप्र के हीलिंग एक्सपर्ट बीके शिवकुमार भाई (37) का। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में आपने अपने जीवन से जुड़े अनेक अनछुए पहलु और राजयोग मेडिटेशन से आए बदलाव को सांझा किया।

पढ़ाई छोड़ मां की सेवा को दी वरीयता : मैं एमबीबीएस कर रहा था। दो साल पूरे भी हो चुके थे, लेकिन मां की तबीयत बिगड़ गई। कई शहरों में डॉक्टरों को दिखाया, तब जाकर बीमारी पकड़ में आई और वह स्वस्थ हुईं। मां को ठीक करने में जीजान लगा दिया। इलाज दो साल चला, इस दौरान पढ़ाई पीछे छूट गई। मां की सेवा में डॉक्टर बनने के सपनों को अर्पण कर दिया। मेरा मानना है कि जीवन में माता-पिता एक बार ही मिलते हैं। उनकी सेवा का जब भी अवसर मिले उसे गंवाना नहीं चाहिए।

ध्यान में बैठता तो सिर घूमने लगता था: ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के पूर्व मैंने और संस्थाओं द्वारा सिखाए जाने वाले ध्यान सीखने की कोशिश की, लेकिन असफल रहा। जब भी आंखें बंद करके ध्यान लगाने का प्रयास करता तो ऐसा लगता था कि पूरी पृथ्वी घूम रही है। पृथ्वी के पांचों तत्वों में हलचल हो रही है। ऐसे भयंकर डरावने सीन सामने आते थे। इससे मैं ध्यान करने से डरने लगा था। खुरई सेवाकेंद्र पर संचालिका बीके किरण दीदी से सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। कोर्स के दौरान ही जीवन, सृष्टि और आत्मा-परमात्मा से जुड़े सारे सवालों के जवाब मिल गए। जिसकी तलाश थी वह पूरी हो गई। सबसे बड़ी बात राजयोग मेडिटेशन खुली आंखों से किया जाता है। राजयोग के अभ्यास से नए-नए अनुभव हुए। जीवन से जुड़े अनेक रहस्य अपनेआप सुलझते गए। नियमित मुरली के अध्ययन, राजयोग से चिंतन की धारा बदल गई। विचारों में सकारात्मकता और दिव्यता आ गई। यहां दिया जा रहा ज्ञान पूरी तरह प्रैक्टिकल है जो हमारी जिंदगी को बदल देता है। मेरे जीवन का मकसद है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों की भलाई कर सकूं। जो परेशानी में, दुख-दर्द और पीड़ा में हैं उनके काम आ सकूं। लोगों की निःस्वार्थ भाव से मदद करके एक आत्मिक आनंद और खुशी की अनुभूति होती है।

शख्सियत

दिल में परमात्म प्रेम

जज्बा, देशभक्ति का जूनून हो तो असंभव भी संभव है

एडवेंचर से नए कीर्तिमान स्थापित कर चुके बीके दिलीप सिंह शेखावत से विशेष बातचीत...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

व्यक्ति जीवन में ऊंचा लक्ष्य, परमात्म प्रेम, देशभक्ति जैसे शौक रखकर असंभव खतरनाक कारनामों को अंजाम देकर बड़ी से बड़ी सफलता पा सकता है। ऐसे ही एक शख्सियत हैं बीके दिलीप सिंह शेखावत जो डेथ जॉन आठ हजार मीटर एवरेस्ट चढ़ाई को फतह करके अमेजन जैसी खतरनाक जंगल से भी खतरनाक जानवरों को फेस करते हुए कई एडवेंचर कारनामें कर चुके हैं। शिव आमंत्रण से खास बातचीत में उन्होंने अपने जीवन से जुड़े ऐसे अनुभवों को शेयर किया। मैं बिरला प्लानिंग एसोसिएट के रूप में कनाडा में रहता हूं। वर्ष 2018 से मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। वर्ष 2019 में एवरेस्ट फतह करने के बाद वहां शिव बाबा का झंडा गाड़कर आया हूं। जहां भी जाता हूं शिव बाबा के झंडे के साथ देश का तिरंगा झंडा भी शान से फहरा कर कर आता हूं। जब मैं डेथ जॉन आठ हजार मीटर एवरेस्ट चढ़ाई पर चल रहा था तब मैंने परमात्मा की शक्ति को महसूस किया। चढ़ाई के दौरान वहां कई लोग हतोत्साहित होकर निराश होकर, हार्ट अटैक से देह त्याग कर देते हैं, उस परिस्थिति में मैंने परमात्मा की शक्ति अपने साथ रख कर सफलता पाई है। उतरने के दौरान अत्यधिक एक्सीडेंट होता है।

कई खतरनाक जानवरों के साथ हुआ सामना

पिछले 16 साल में मैंने अलग-अलग देश में छह हजार मीटर तक करीब 15 बार चढ़ाई करके खुद को आजमाया। फिर मैंने वर्ष 2019 में माउंट एवरेस्ट पर सफलता पाई। वहां पहुंचने पर गवर्नमेंट का व्यक्ति पूर्व नेपाल नरेश पृथ्वी नारायण के स्टेच्यू के पास फोटो लेकर एविडेंस बनाता है। नीचे से राजा का स्टेच्यू ले जाया गया है जहां चढ़ने वाले व्यक्ति का फोटो वहां के पहाड़ से प्रूफ के तौर पर लिया जाता है। वर्ष 2021 में सहारा मैराथन जिसमें अपनी सारी व्यवस्था खाना-पीना ऑक्सीजन लेकर ही चलना होता है वहां का टेंपरेचर 60 डिग्री को भी पार कर जाता है, जहां बहुत सारे रनर्स डिहाइड्रेटेड हो जाते हैं। उस परिस्थिति में कईयों की मौत हो जाती है। वहां भी हमने परमात्मा शिव बाबा की शक्ति, राजयोग ध्यान की पावर और आत्मविश्वास से सफलता पाई है।

अमेजन जंगल भी पार किया

दुनिया का प्रसिद्ध अमेजन जंगल के अंदर 230 किमी दौड़कर आया हूं। जहां कई बार गिरे, सिर पर चोट लगी, खून निकला। रास्ते में काफी बारिश के साथ भयानक कीचड़ का भी सामना करना पड़ता है। कई खतरनाक जानवरों के साथ सामना हुआ वहां के खतरनाक बुलेट एंट चींटी जो 25 मधुमक्खी काटने के बराबर एक काटती है उसने काटा। अमेजन जंगल में 38 लोग हमारे साथ एडवेंचर रेस में निकले। इस भयानक जंगल में दस मिनट किसी जगह पर अगर आप खड़े हो गए तो आपको चीटियां उठाकर ले जाएगी। वहां की रेड एंट हाथियों को भी एक घंटे में खा सकती हैं।

बचपन से है एडवेंचर का शौक

मुझे बचपन से ही एडवेंचर का शौक है। मेरे बच्चों को भी यह शौक है। पत्नी शुरू में मना करती थी, लेकिन बाद में वह भी सहयोग करने लगीं हैं। देश के लिए कुछ करना, देश भक्ति हमारी रग-रग में बसती है। जुनून के साथ चैलेंजिंग जीवन बहुत पसंद है। जिसके कारण मिलिट्री में मुझे बहुत सारी ट्रेनिंग मिली है। विपरीत परिस्थितियों में प्रकृति आपदाओं में खतरनाक जीव-जंतुओं से कैसे हैंडल करना है यह सब मुझे सिखाया गया है।

चैलेंजिंग राह में हर चीज नियंत्रण में रखना पड़ती है

शेखावत ने कहा कि मैं कोई भी काम उमंग-उत्साह और आत्मविश्वास के साथ करता हूं। सहारा रेगिस्तान में सबसे गर्म स्थान पर मात्र 3 लीटर पानी से अपना काम चलाना पड़ा। ऐसे चैलेंजिंग में खाना-पीना, सोना सब नियंत्रण में रखना पड़ता है। 47 साल की उम्र में अब तक बीमार नहीं हुआ। वर्ष 2018 में मां के देहांत के बाद मेरे पिताजी द्वारा प्रेरित करने पर मुझे मेडिटेशन सीखने के लिए प्रेरणा मिला। तब से मैं राजयोग मेडिटेशन का रोज अभ्यास करता हूं। मुझे पहले ही पता चल जाता है कि आगे कौन-कौन सी समस्याएं आनी हैं, उसको हैंडल कैसे करना है। हर एक समस्याओं का उत्तर हमें समय से पहले मिल जाने के वजह से मैं अपनी सफलता के प्रति निश्चिंत और आत्मविश्वास से भरा रहता हूं। मेडिटेशन के वजह से ही माउंट एवरेस्ट चोटी फतह करने में सफलता पाई है।

जूनून से असंभव भी संभव

मैं अपने लाइफ में इतना बिजी हूं कभी मुझे बाहर का कुछ अनावश्यक बातें देखने का मौका मिलता ही नहीं है। मैं दो जॉब एक खर्चे के लिए, दूसरा शौक के लिए करता हूं। माउंट एवरेस्ट पर इतनी ठंड थी की मेरी दो उंगलियां कट गई उस कटी हुई उंगली को मैं आज तक फ्रिज में रखा हुआ हूं अपनी अमानत उपहार अवार्ड समझ कर। रोज सवेरे 4 बजे उठकर मेडिटेशन करता हूं। खाने में हरी सब्जी और फल लेता हूं। सुबह-शाम डेढ़ घंटा एक्सरसाइज करता हूं। दोपहर में 5 किमी वॉक करता हूं वह मेरा लंच है। मेरा मानना है कि दिल में परमात्म प्रेम, जज्बा और देश भक्ति का जूनून हो तो असंभव भी संभव है।

चमत्कार...सिर में गोली लगने के बाद भी मौत को मात दे आए **बीके सुरेश**

3 मार्च 2015, रात 12 बजे की घटना : अहमदाबाद-आबू रोड हाईवे पर सिद्धपुर के पास बदमाशों ने घेरा, गाड़ी लूटने में असफल रहे तो गोली चलाकर भागे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जाको राखे साईंयां मार सके न कोई। इस कहावत को साकार में चरितार्थ करती है ब्रह्माकुमार सुरेश के जीवन से जुड़ी एक घटना। आपने मौत को भी मात देकर यह साबित कर दिखाया है कि जब हम अपना तन-मन-धन और जीवन परमात्मा की सेवा में अर्पण कर देते हैं तो उसका रखवाला वह स्वयं होता है। कर्नाटक के कोर्ज में 16 मई 1965 में जन्मे बीके सुरेश ने दसवीं तक पढ़ाई की है। वर्ष 1990 में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संपर्क में आए। इस ज्ञान को पाकर आपका जीवन पूरी तरह बदल गया और विश्व सेवा की राह पर चलते हुए अपना जीवन सेवा में समर्पित कर दिया। आप पिछले 27 साल से संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में एजुकेशन विंग में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में जीवन से जुड़ी काल के मुंह से बाहर निकलने की घटना को सांझा किया। जानते हैं बीके सुरेश के शब्दों में उस रात की पूरी कहानी....

3 मार्च 2015 की बात है। कार्यक्रम निपटाकर रात 10 बजे आदरणीय कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाईजी को लेकर अहमदाबाद से आबू रोड, शांतिवन के लिए निकले। हमेशा की तरह उस दिन मैंने प्यारे शिव बाबा का आह्वान किया और गाड़ी लेकर चल दिए। बाबा को याद करते हुए जा रहे थे, तभी गुजरात के सिद्धपुर से एक गाड़ी ने हमें फॉलो करना शुरू कर दिया। पहले तो कुछ नहीं समझे लेकिन जब दो-तीन किमी तक उन्होंने हमारा पीछा किया तो शक हुआ। पांच किमी पीछा करने के बाद बदमाशों ने अपनी गाड़ी को हमारी गाड़ी के आगे लगा दिया। हथियारों से लैस एक के बाद एक पांच बदलाश गाड़ी से धड़ाधड़ उतरे और हमारी गाड़ी को घेरकर पिस्टल तान दी। साथ ही मुझे धमकाते हुए बाहर निकलने के लिए कहा। मैंने तुरंत बाबा को याद किया और कहा कि बाबा अब आप ही संभालो और बिना घबराए शांत रहा। वह लगातार मुझे बाहर निकलने के लिए धमकाते रहे। उस वक्त रात के करीब 11.30 बज रहे थे। करीब 5-10 मिनट तक मैंने कांच नहीं खोला। इस दौरान पीछे की सीट पर बीके मृत्युंजय भाईसाहब सो रहे थे। वह इस घटना से अंजान थे। कुछ देर बाद हमारी आवाज सुनकर भाईसाहब की नींद खुल गई और हम लोग गाड़ी से बाहर आए। भाईसाहब ने उन्हें समझाया हम लोग ब्रह्माकुमारीज़ से हैं और आबू रोड जा रहे हैं। हमारे पास कोई पैसा आदि नहीं है। लेकिन उनकी प्लानिंग थी कि कैसे भी वह हमारी गाड़ी लेकर भाग निकलें। इस दौरान सड़क से जा रहे दूसरे गाड़ी वाले भी हमें देखकर रुक गए। उन्होंने भी बदमाशों को समझाया लेकिन वह समझने को तैयार नहीं थे। आधा घंटा समझाइश के बाद जब हम जाने लगे तो उन्होंने जाते-जाते मेरे सिर पर पिस्टल तान दी और गोली चला दी। परमात्मा का कमाल है कि गोली सिर में लगने के बाद भी जबड़े में आकर फंस गई। इस दौरान मैं खून से लथपथ लहूलुहान हो चुका था। लेकिन पूरे समय शिव बाबा को याद करता रहा कि बाबा अब आप ही जानिए। आपकी सेवा में यदि आत्मा इस देह से निकल जाए तो मेरा परम सौभाग्य। साथ ही मन ही मन संकल्प करता रहा कि आत्मा तो अविनाशी है। सूक्ष्म वतन में बाबा की गोद में जाकर बैठ गया तो दर्द का बिल्कुल एहसास नहीं हुआ। ऐसा महसूस हो रहा था कि परमात्मा की लाइट की किरणें मुझकर पड़ रही हैं और शक्तियां भर रही हैं। गोली लगने से लगातार खून गिर रहा था। भाईसाहब ने तुरंत 108 एंबुलेंस को कॉल किया। 20 मिनट के बाद एंबुलेंस आई। पहले महेसाणा लेकर गए जहां डॉक्टरों ने मना कर दिया तो फिर अपोलो हॉस्पिटल अहमदाबाद लेकर पहुंचे। लेकिन तब तक शरीर से तीन लीटर से अधिक ब्लड निकल चुका था। डॉक्टरों को आश्चर्य था कि शरीर से इतना ब्लड निकलने के बाद भी मैं शांत था और बात कर रहा था। मुझे पूरे समय होश रहा। डॉक्टरों ने आशा ही छोड़ दी थी कि मैं बच पाऊंगा। सभी का कहना था कि यह परमात्मा का ही कमाल है कि सिर में गोली लगने के बाद वह जबड़े की ओर मुड़ गई, नहीं तो मिनटों में गोली एक सिरे से दूसरे सिरे से होकर निकल जाती है। ऑपरेशन सफल रहा और मैं स्वस्थ हो गया। करीब डेढ़ माह मुंह बंद रहा। नली द्वारा सिर्फ जूस पीता था। बिना ईश्वरीय चमत्कार के आपका बचना मुश्किल था। कुछ समय ट्रॉमा हॉस्पिटल में भी रहा। परमात्म अनुभूति शिविर में अव्यक्त बापदादा से मिलने पर (अव्यक्तमूर्त दादी गुलजार जी) उन्होंने कहा बच गए हो बच्चे और बापदादा मुस्कुराए। उस रात की घटना से मुझे अहसास हुआ कि यदि हमारे कर्म श्रेष्ठ हैं, परमात्म की याद और मदद सदा साथ है, उसकी सेवा में आप श्रीमत के साथ तत्पर हैं तो काल के मुंह से भी बाबा निकाल लाते हैं।

स्मृति शेष... राजयोगिनी ईशु दादी की दूसरी पुण्यतिथि पर विशेष...

ईश्वरीय यज्ञ की वफादार

ईमानदार और फरमानबरदार खजांची थीं राजयोगिनी दादी ईशु

नि :स्वार्थ सेवा की नई परिभाषा गढ़ गईं दादी

दादीजी के जीवन की अनमोल शिक्षाएं

- **सदा खुश रहो, कभी भी रोना नहीं।**
- **बाबा ने हमें बोला है, सदा खुश रहो, कभी भी मुरझाना नहीं है।**
- **हमारे जैसा खुशनसीब दुनिया में कोई नहीं होगा।**

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

राजयोगिनी ईशु दादी। एक ऐसा दिव्य व्यक्तित्व जिन हाथों से करोड़ों रुपये गुजरने के बाद भी कभी एक रुपये का हिसाब-किताब ऊपर-नीचे नहीं हुआ। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थापना से लेकर जीवन की आखिरी सांस तक आर्थिक कारोबार की जिम्मेदारी के साथ कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालती रहीं।

इसे ईमानदारी, वफादारी की पराकाष्ठा ही कहेंगे कि ईश्वरीय यज्ञ के प्रति समर्पण इतना था कि एक बार उनकी निजी सचिव रहीं बीके कविता बहन ने हंसी-हंसी में कहा कि दादी कुछ पैसे अपने पास भी रख लिया करो, वक्त पर काम आएगा। कुछ हमारे भी निजी खर्च होते हैं, सामान लेना होता है। इस पर दादी ईशु का जवाब था कि बहन, मैं तुम्हें एक रुपये नहीं दूंगी। तुम्हारे लिए जो भी सामान चाहिए है तो उसकी चिटकी बनाओ और यज्ञ से लाओ। मेरे पास जो ईश्वरीय यज्ञ का धन आता है वह अमानत है। बाबा ने मुझे जिम्मेदारी सौंपी है, मैं बाबा को क्या मुंह दिखाऊंगी। मैं अपना हिसाब-किताब क्यों बनाऊं। हमारी सच्चाई-सफाई ही हमारी पूंजी होती है। वहां से तुम्हें पैसे मिलेंगे और बच जाएं तो लौटा देना, लेकिन मैं तुम्हारे साथ हिसाब-किताब डायरेक्ट नहीं बनाऊंगी।

दादी ने पूरा जीवन पैसों का हिसाब-किताब रखने में समर्पित कर दिया लेकिन कभी खुद के लिए भी कुछ सामान चाहिए होता तो उसे बाकायदा नियम मुताबिक पास करके मंगवाती। ऐसी महानता और ईश्वरीय खजानों की खजांची थीं राजयोगिनी दादी ईशु। 6 मई 2021 को 93 वर्ष की आयु में इस नश्वर देह को त्याग कर अव्यक्त हो गईं लेकिन उनके जीवन की शिक्षाएं और सिद्धांत आज भी लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

सात साल की आयु में ओम मंडली से जुड़ीं

1 मई 1928 को सिंध हैदराबाद (अब पाकिस्तान) में दादी ईशु का जन्म हुआ। पिता दयालदास थडानी और माता कमला ने उन्हें **ईश्वरीय** नाम दिया था। ईश्वरीय का घर ब्रह्मा बाबा के घर के ही नजदीक था। खेलते-खेलते एक बार ईश्वरीय ब्रह्मा बाबा के साथ उनके घर सत्संग में पहुंच गईं। इसके बाद उनके माता-पिता भी जाने लगे। इस तरह उन्हें वहां ज्ञान की बातें मन को भाने लगीं और वह ओम मंडली से जुड़ गईं। सात वर्ष की आयु में ईश्वरीय का दाखिला ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग स्कूल में कराया। यहां से मिले दिव्य संस्कारों ने जीवन को नई दिशा की ओर मोड़ दिया। ब्रह्मा बाबा ईश्वरीय को प्यार से ईशु कहकर पुकारते थे। तब से ईश्वरीय का नाम ईशु पड़ गया। बचपन से ही ईशु का स्वभाव बहुत शांतचित्त, धीर-गंभीर था। इस पर परमात्मा ने उन्हें अलौकिक नाम पूर्णशांतामणि दिया। दादी की विशेषता थी कि परमात्मा द्वारा ब्रह्मा बाबा के मुख से उच्चारित किए गए महावाक्यों को शार्ट हैंड में लिखती थीं। इतनी स्पीड और कुशलता से और कोई नहीं लिख पाता था।

आखिरी सांस तक साथ रखती थीं वह अनमोल घड़ी

पांडव भवन की बात है... एक बार ब्रह्मा बाबा ने कहा कि हमारी योग-तपस्या में ये कीमती वस्तुएं बाधा न बनें इसलिए इन्हें यज्ञ में स्वाहा कर दो, तभी दीदियों ने अपनी कीमती वस्तुएं जैसे- अंगूठी, माला, सोने-चांदी के बर्तन आदि ईश्वरीय कोष में जमा कर दिए। तभी उनमें से एक घड़ी दिखी। ब्रह्मा बाबा ने वह घड़ी सभी को दिखाते हुए कहा कि ये घड़ी मैं ईशु बच्ची को देता हूं और मैं ईशु बच्ची से कभी भी टाइम पूछ लूंगा। तब दादीजी ने कहा कि जी बाबा, मैं ये घड़ी हर पल अपने साथ रखूंगी, मरते दम तक। हकीकत में दादी आखिरी सांस तक उस घड़ी को पहनती रहीं। किसी भी कार्यक्रम में जब वह वक्तव्य करने जातीं तो मौजूद हजारों की भीड़ को वह घड़ी बच्चों की तरह दिखातीं और बतातीं कि उन्हें यह ब्रह्मा बाबा ने दी थी। ऐसी सरलता और सादगी की मिसाल थीं दादी।

दादी प्रकाशमणि के साथ सेवा में रहीं हर पल तत्पर

18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने के पूर्व इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सारा कारोबार दादी प्रकाशमणि के हाथों में सौंप दिया था। लेकिन यज्ञ कारोबार को अधिक न जानने के कारण बाबा ने संदेशी बच्चियों को संदेश भेजा कि ईशु बच्ची को यज्ञ के सारे कारोबार का बाबा ने बताकर रखा है और उसी समय निर्देश दिया का दादी प्रकाशमणि इसे हर समय सेवा में अपने साथ रखें। उसके बाद दादी ने ईशु दादी को हर समय देश-विदेश में सदा अपने अंग-संग रखा। यज्ञ में जो भी भंडारी आती दादी प्रकाशमणि उसे ईशु दादी के पास भेज देती थीं।

सरलता स्नेह की मूरत थीं

ईशु दादी के साथ बचपन से ही सेवाएं करने का मौका मिला। वर्ष 1937 में जब हैदराबाद में ओम मंडली की शुरुआत हुई तो लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर और ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। ईशु दादी का मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैंपल बनकर रहीं। वे सरलता और स्नेह की मूरत थीं। कभी भी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। इस विश्व विद्यालय में आए एक एक रुपये का हिसाब-किताब उनके पास होता था। – **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजस्थान

निजी सचिव बीके कविता बहन की जुबानीं, दादी की कहानी...

ईशु दादीजी के साथ जीवन के 25 साल से अधिक अंग-संग रहकर सेवा का सौभाग्य मिला। वर्ष 2007 में दादी प्रकाशमणि दादीजी के अव्यक्त होने के बाद ईशु दादी के निजी सचिव के रूप में सेवा मिली। दादीजी के पास दैवी गुणों का खजाना था। दादी के जीवन से सीखा है कि कैसे लोगों की प्रति उनका आचरण और भावना एक समान रहती थी। उनकी दिनचर्या एक्टिव, अलर्ट और एक्यूरेट थी। एकांतप्रिय के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी सदा अचल-अडोल और एकरस अवस्था में रहती थीं। उनकी दिनचर्या रात 2.30 बजे शुरू होती थी। उठकर बैड पर ही बैठकर दादी थोड़ी देर योग करतीं, बाद में दादी कॉटेज में बाबा के कमरा में ब्रह्ममुहूर्त में 3.15 बजे से 4.45 बजे तक योग करती थीं। दादी ज्यादा बोलती नहीं थी। जब आप 100 बात करोगे उसमें से एक बात करेंगी। हां, ना में ही जवाब देती थीं। उनकी सारी बातें मैं चेहरे के हाव भाव से ही समझ जाती थी। इतने बड़े संगठन में रहते हुए भी छोटा हो या बड़ा सभी से गहरा प्यार करती थीं। हर एक को सम्मान देना विशेषता थी। दादी के पास कोई सहायता के लिए आए तो कभी किसी को मना नहीं किया। दादी का भाव रहता था कि किसी का काम नहीं रुकना चाहिए।

संपादकीय

मन को आदेशित करना सीखें

जैसे घर परिवार को चलाने के लिए कर्मचारी, अधिकारी और मुखिया होता है। ऐसे ही इस शरीर को चलाने के लिए मन, बुद्धि के साथ कर्मेन्द्रियां और ज्ञानेन्द्रियां होती हैं। मन अधिकारी है परन्तु आत्मा इन कर्मेन्द्रियों का राजा है। इसलिए मन हमारे वश में होना चाहिए ना कि आत्मा। मन में ऐसी शक्ति है कि वह दुनिया की हर चीज आपके चरणों में ला सकता है। उसके अन्दर इतनी शक्ति है कि दुनिया की हर चीज पर विजय प्राप्त करा सकता है। परन्तु हमारा मन पर कितना अधिकार है यह जानना जरूरी है। जितने अधिकार पूर्वक हम उससे आदेश करेंगे उतना ही वह आपका कहना करेगा। क्योंकि मन के राजा हम हैं ना कि मन हमारा राजा है।

यह अधिकार आपको समझना और जानना होगा। इसलिए मन को अधिकार पूर्वक आदेशित करना सीखें। इससे ही आपके जीवन में तरक्की की राह खुलेगी। यही नहीं बल्कि आपके वश में सारी कर्मेन्द्रियां और ज्ञानेन्द्रियां होंगी। फिर आप राजा को दुःख आने का कोई भी कारण नहीं होगा। क्योंकि दुःख और सुख का खेल केवल सोच के रूप पर ही निर्भर है। अपने आपको अंदर से इतना मजबूत करें कि वह आपका पूरा कहना माने। इसके लिए आपको कोई खास प्रकार के भोजन की जरूरत नहीं बल्कि आत्मा और मन का भोजन सकारात्मक विचार हैं। सकारात्मक विचार के साथ कर्म ही आत्मा और मन को सही दिशा में ले जा सकते हैं। मन से जो काम हम सफलता पूर्वक करवाना चाहते हैं उसे हम पहले स्पष्ट रूप से लक्ष्य निर्धारित कर देखना शुरू करें, फिर हम उन विचारों को सोते उठते हर कर्म करते हम बार-बार दोहराते रहें तो मन आदेश मान कर सफलता अवश्य प्राप्त कराएगा।

बोध कथा/जीवन की सीख

ईमानदार बालक

एक गांव में नंदू नाम का एक बालक माता-पिता के साथ रहता था। एक दिन दो भाई अपनी फसल शहर में बेचकर ट्रैक्टर से गांव आ रहे थे। फसल बेचकर जो पैसा मिला वो एक थैली में रख दिया था। अचानक एक गड्ढा आ गया और थैली नीचे गिर गई। बालक नंदू खेलकूद पर अपने घर जा रहा था। अचानक उसने देखा कि एक थैली पड़ी है उसे खोलकर देखा तो नोट भरे हुए थे। वह सोचने लगा किसकी थैली है। उसने सोचा कि अगर यही छोड़ गया तो कोई और उठा ले जाएगा। फिर जिसकी यह थैली है उसे कितना दुख होगा। हालाँकि लड़का छोटा था और निर्धन माँ बाप का बेटा था। लेकिन उसमें समझ-बूझ अच्छी थी। वह थैली घर ले आया। उसे झोपड़ी में छुपा कर रख दिया। फिर वापस आकर उसी रास्ते पर खड़ा हो गया उसने सोचा। कोई रोता हुआ आएगा तो पहचान बताने पर उसे थैली दे दूंगा। इधर जब थोड़ी देर बाद दोनों भाई घर पहुंचे तो ट्रैक्टर में थैली नहीं थी । दोनों भाई यह जान निराश होते हुए बहुत दुखी होने लगे। पूरे साल की कमाई थैली में भरी थी। दोनों भाई टॉर्च लेकर उसी रास्ते पर वापस चले जा रहे थे। बालक नंदू उन्हें रास्ते में मिला। उसने उन दोनों से कुछ भी नहीं पूछा। लेकिन उसे शंका हुई की शायद वह थैली इन्हीं की हो। उसने उनसे पूछा 'आप लोग क्या ढूंढ रहे हैं? उन्होंने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर पूछा 'आपकी थैली खो गई है क्या? दोनों भाई एकदम रुक गए और बोले हां। नंदू बोला 'पहले थैली की पहचान बताइए। जब उन्होंने पहचान बताई तो बालक उन्हें अपने घर ले गया और उसे सौंप दी। नंदू की ईमानदारी पर दोनों हैरान थे। उन्होंने इनाम के तौर पर कुछ रुपए देने चाहे, पर नंदू ने मना कर दिया बोला 'यह तो मेरा कर्तव्य था। दूसरे के दिन वह नंदू के स्कूल पहुंच गए। अध्यापक को सारी घटना बताई और विद्यार्थियों के सामने उसे धन्यवाद देने आए हैं। अध्यापक के नेत्रों से आंसू झरने लगे। उन्होंने बालक की पीठ थपथपाई और पूछा 'बेटा, पैसे से भरे थैले के बारे में अपने माता-पिता को क्यों नहीं बताया? नंदू बोला, गुरुजी मेरे माता-पिता निर्धन हैं । कदाचित उनका मन बदल जाता तो हो सकता है रुपयों को देख कर उसे लौटने नहीं देते। यह सोच मैंने कुछ भी नहीं बताया। सभी ने नंदू की बड़ी प्रशंसा की और कहा बेटा- धन्यवाद गरीब होकर भी तूने ईमानदारी को नहीं छोड़ा।

संदेश: सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है। ईमानदार होना हमें सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति की स्थिति में ले जाता है। जिस प्रकार इस छोटे से बालक ने अपने ईमान को नहीं खोया, भले ही उसकी गरीबी के लिए कष्टदाई थी। लेकिन ईमानदारी व्यक्ति छोटा हो या बड़ा ईमानदारी का गुण ही जीवन के सबसे बड़े गहने हैं। ईमानदारी से ही हमारे व्यक्तित्व को प्रसिद्धि मिलती है। ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।

मेरी कलम से

स्वामी सूर्याचार्य कृष्ण गिरी महाराज,
द्वारका पीठाधीश्वर, जूना अखाड़ा मुरली मंदिर, हरिद्वार, उत्तराखंड

जन्म वहीं सफल है जो इन बहनों की तरह संपूर्ण जीवन समर्पित कर दें

140 देशों में आध्यात्म का संदेश दे रहीं हैं बहनें

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

बूंद लाखों बरसती हैं किंतु मोती वही बनती हैं जो स्वाति नक्षत्र में सीप में मुंह में पड़ता है। नक्षत्र वही पूजा जाता है जो किसी कार्य को सिद्धी द्वार तक पहुंचा दे। जन्म और जीवन लाखों धारण करते हैं लेकिन जन्म वहीं सफल है जो दादी रतन मोहिनी की तरह अपना संपूर्ण जीवन आध्यात्म को समर्पित कर दे। इस महान तपोभूमि पर खड़े होकर मैं यह कहना चाहता हूं कि यह ब्रह्माकुमारीज्ञ का परिवार विश्व का एकमात्र परिवार जो दुनिया के 140 देशों के अंदर आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के उत्थान के लिए शांति और सद्भावना के लिए समर्पित रूप

से कार्य कर रहा है। खासकर इस तरह के कार्य माता और बहनों के द्वारा हो रहा है। यह अपने आप में अनूठा है।

दादी मेरी मां हैं वे बहुत बड़ी राजयोगिनी हैं इसलिए हम लोग भी राजयोगी घर में ही जन्म लेते हैं। तब जाकर योगी बन जाते हैं और जब योगी बनने के बाद योगी के पास मां के अलावा कोई शब्द नहीं रह जाता है। आगे हम सब का जन्म ब्रह्मलोक होते हुए स्वर्णिम सुंदर दुनिया में होने वाला है। मानस परिवार और दादी ने हम सब को बुला कर परमात्मा के रंग में रंग दिया। परमात्मा हमारे द्वारा द्वारका में दुनिया का सबसे सुंदर मुरली मंदिर बनवाया और यहां आबू की धरती पर परमात्मा द्वारा रोज ज्ञान-ध्यान के साथ ज्ञान रूपी मुरली सुनाते हैं। ज्ञान रूपी ध्यान मुरली आखिरी सांस तक नहीं छोड़ना है। इन बहनों द्वारा जो ज्ञान सुनाया जा रहा है आज यह ज्ञान समाज से बुराइयों को दूर करने के लिए,लोगों को अपनी मानसिक विकृतियों को सकारात्मक बनाने के लिए बहुत जरूरी है। आध्यात्म तो हमारी संस्कृति रही है। बिना आध्यात्म के जीवन में परिवर्तन नहीं होता है। योग से हमारी आंतरिक शक्तियां विकसित होती हैं। हमारा मनोबल बढ़ता है।

परिष्कृत चेतना में जीवन दर्शन की नैसर्गिकता

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 58

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

'मनुष्य जीवन की खोज पूर्ण प्रवृत्ति के कारण ही आत्मतत्व एवं परमात्मा सत्ता का दार्शनिक बोध संभव हुआ है जिसमें आध्यात्मिक जीवन का आत्मबल और दृढ़ता की शक्ति का निरंतर अनुभूति गत प्रवाह सृष्टि पर आत्मिक गतिशीलता एवं जागृत अनादि स्वरूप की अखंड ऊर्जा को आत्म कल्याण के सानिध्य में मानवता के मंगल हेतु उपयोग किया जा सकता है। जीवन में उच्चतम स्थितियों से महानतम अवस्था की प्राप्ति धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारित होती है जिसके परिष्कार हेतु महान जीवन की स्थापना एवं पवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साधने के लिए आध्यात्मिक परिदृश्य में उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलितार्थ द्वारा ही सुनिश्चित होता है।

'नैसर्गिक आनंद की गतिशील पृष्ठभूमिः सृष्टि पर समस्त प्राणी मात्र का मूलभूत उद्देश्य आत्मिक सुख,शांति एवं आनंद की प्राप्ति है जिसके लिए आत्म ज्ञान के समर्पित स्वरूप में संपन्नता और संपूर्णता हेतु निरंतर किया जाने वाला गहन अध्ययन एवं अनुसंधान से संबंधित पुरुषार्थ है जिसमें परमात्म स्मृति बोध एवं आत्मिक सुख की अनुभूति के अत्यधिक गूढ़तम रहस्य समाहित रहते हैं। जीवन के गरिमामई आत्म पक्ष को सुदृढ़ स्वरूप में बनाए रखने के लिए आत्मिक शांति का वास्तविक स्वधर्म तथा उपलब्धि पूर्ण जीवन की सहज स्वीकारोक्ति होती है जिससे नैसर्गिक आनंद

की गतिशील पृष्ठभूमि और अनहद नाद का वृहद समागम निर्मित हो जाता है जो चेतना की चैतन्यता को परमानंद अवस्था से संबद्ध कर देता है।

सात्विक स्वरूप में जीवंत प्रासंगिकताः सतोप्रधान स्थिति के निर्माण में आत्मगत चेतना–मन, वचन, कर्म, समय, संकल्प, संबंध एवं स्वप्न में भी पवित्रता को स्थायित्व प्रदान करने का उत्तम विधि से जतन करती है जिसके परिणाम–सात्विक स्वरूप का जीवंत प्रसंग एवं निःस्वार्थ प्रेम के प्रस्फुटित परिवेश में आत्मीयता का आभामंडल सृजित हो जाता है जिसमें पवित्रता की धरोहर तथा आत्मा कामंगलकारी स्वरूप विद्यमान रहता है। मनुष्य जीवन की खोज पूर्ण प्रवृत्ति के कारण ही आत्मतत्व एवं परमात्मा सत्ता का दार्शनिक बोध संभव हुआ है जिसमें आध्यात्मिक जीवन का आत्मबल और दृढ़ता की शक्ति का निरंतर अनुभूतिगत प्रवाह सृष्टि पर आत्मिक गतिशीलता एवं जागृत अनादि स्वरूपकी अखंड ऊर्जा को आत्मकल्याण क सानिध्य में मानवता के मंगल हेतु उपयोग किया जा सकता है।

आत्मिक पवित्रता से आराध्य भावभूमिः जगत में मानव आत्माओं के आगमन एवं प्रस्थान के मध्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहेली–मैं कौन हूं? से आरंभ होती है जिसमें आत्मगत विश्लेषण–आदि स्वरूप की स्मृति तथा पूर्वज देवात्मा के सात्विक मनोजगत से होनेके कारण,पूज्यस्वरूप में आत्मिक पवित्रता और आराध्य भाव की विनम्रता जीवन पर्यंत बनी रहती है। जीवन में उच्चतम स्थितियों से महानतम अवस्था की प्राप्ति धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारित होती है जिसके परिष्कार हेतु महान जीवन की स्थापना एवं पवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साधने के लिए आध्यात्मिक परिदृश्य में उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलितार्थ द्वारा ही सुनिश्चित होता है।

परिष्कृत चैतन्यता द्वारा जीवन दर्शन : जीवन दर्शन की नैसर्गिकता का परिदृश्य जब परिष्कृत चेतना के उज्जवल स्वरूप में प्रस्फुटित होता है तब आत्मगत बोध गम्यता की चैतन्यता संपूर्णता के परिवेश में लौकिक – भौतिक, अलौकिक–अभौतिक के साथ पारलौकिक–पराभौतिक के सूक्ष्म अंतराल से संबंधित अंतर संबंधों की वास्तविकता से स्वयं को संबद्ध करके आत्महित में सहज ही संलग्न हो जाती है। परिष्कृत चेतना की गौरवान्वित गतिशीलता को बनाए रखने के लिए गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन के सानिध्य द्वारा जीवन के व्यवहारिक दर्शन में आध्यात्मिक पुरुषार्थ के प्रति–अगाध श्रद्धा से युक्त आस्था ही अंतर्मन की मान्यता को पारलौकिकता की परिधि के अंतर्गत स्वयं की नैसर्गिक उपस्थिति को स्थायित्व प्रदान करने पर बल देती है जिससे आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति का पवित्रतम मार्ग प्रशस्त हो जाता है ।

"खुद को जानो तो खुदा को जान जाओगे, खुद को पहचानो तो खुदा को पहचान जाओगे, खुद की कमियों को खुद ही भरो, तभी खुदा का प्यार पाओगे- **बीके गजानंद,** मीडिया ऑफिस, शांतिवन

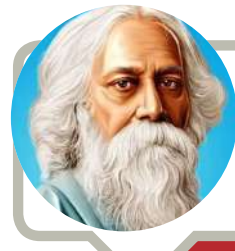

"आप फूलों को एकत्रित करने के लिए रुको मत, बढ़ते चलो, आगे बढ़ते चलो, तुम्हारी राह में निरंतर फूल खिलते रहेंगे।"

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर, कवि, लेखक

"भगवान का ध्यान करते समय इतने मग्न हो जाएं कि आंखों से आंसु बहने लगें। शुद्ध होने का एकमात्र तरीका भगवान का ध्यान है।"

श्रीचैतन्य महाप्रभु, वैष्णव धर्म

स्वदर्शन चक्र फिराना माना 'स्व की स्मृति' में रहना

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

स्वदर्शन चक्र फिराना माना 'स्व की स्मृति' में रहना। देह-अभिमान वश जो अन्दर संकल्प-संस्कार में कुछ किचड़ा भरा हुआ है, जब तक वह है तब तक सुई साफ फ्री हो करके चुम्बक को नहीं खींचती, न स्वयं शान्ति और शुद्ध प्रेम का अनुभव करती है। तो पहले अपने संकल्प को शुद्ध शान्त बनाएं। कई बार अशुद्ध संकल्प अंदर घुस जाता है, क्योंकि पुराने संस्कार छिपे हुए हैं, चेंज नहीं हुए हैं।

बाबा से पहले-पहले हमको शान्ति और प्रेम मिला है। सुनने की भी समझ (अक्ल) पीछे आई है। पहले शान्ति और प्रेम ने अपने तरफ खींचा है। शान्ति और प्रेम ऐसी चीज है, जो सभी उसे स्वीकार करते हैं। आज दिन तक हमने कभी बाबा से कोई क्वेश्चन नहीं पूछा होगा। अपने आप मुरली से उत्तर मिलता है। सिर्फ वह अच्छी तरह से समझी हुई हो, धारणा की हुई हो, हमारे लाइफ में हो तो दूसरों को हम अपने जीवन से उदाहरण से उत्तर दे सकते हैं। मनुष्य से देवता बनने के पहले एंजिल बनने की पढ़ाई परमात्मा से पढ़ी है, उसकी अथॉरिटी है। योग से सब काम बाबा करा ही देंगे या कर लेंगे। जो कोई इंसान नहीं कर सकते हैं। हम आर्डनरी इंसान बदल गए। इंसान तो हम हैं ही नहीं, बाबा हमको जिस दृष्टि से देखता है और मैं भी जैसे बाबा को पहचानकर देखती हूं वह दृष्टि सदा सुखकारी, कल्याणकारी है। वह मेरी दृष्टि बनी रहे। दृष्टि का वृत्ति से कनेक्शन है। वृत्ति का सूक्ष्म संकल्प से है। शास्त्रों का सार भगवान ने सुनाया है, मैंने सुना है। सिर्फ कानों द्वारा नहीं सुना है, दिल में भर गया है। जब जो चाहे वह निकल सकता है। जिस घड़ी जो चाहें जहां जरूरत होगी वहां एक्यूरेट टाइम पर निकल आएगा और वह आत्माओं को टच हो जायेगा। तो कितने ऊँचे ते ऊँचे भगवान के महावाक्य हमारे कानों ने सुने हैं, दिल में भरा है तो फलक से निकल सकता है। फलक में अथॉरिटी है, स्नेह है, सच्चाई है। बनावटी बात नहीं सुना रहे हैं। किसके कान खुल जाएं। बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए। अन्दर से फलक से जिगर से निकलेगा तो आंख खुलेगी। किसी को सुनाकर आओ तो उसके सामने फरिश्ता घूमता रहे - यह कौन आया था, क्या सुनाकर गया। हम सबको अंधकार से निकालने वाले हैं। बाबा ने हमको ज्ञान से, अपना बनाकर लाइट बना दिया है। ज्ञान की एक-एक बात इतनी अच्छी है जो सेकण्ड में हल्के हो जाते हैं। फिर बाबा के बच्चे बने तो हल्के बन गए। हमारा जवाबदार वह है। फिर जितना योगयुक्त रहे तो लाइट ही लाइट नजर आती है। जो ईश्वर को याद करने वाले होंगे, उनके आगे कोई देहधारी का नाम रूप नहीं आएगा। कहेंगे ईश्वर ज्योति है। तो बाबा जो सुनाता है, वह एक-एक बोल दिल को लग जाए तो जो हमारा आवाज निकलेगा वह दिलों को लगेगा, जिसमें भाषा का भी सवाल नहीं है। मधुबन का वायुमंडल जैसे हमको चैंज कर देता है। मधुबन में बाबा है, बाबा के साथ रहने वाले, आने वाले ही लाभ उठाने वाले हैं। यही आकर्षण सबको खींचती है। उसके लिए फिर विधान बनाने पड़ेंगे। हमारे नियम बने पड़े हैं, दिनचर्या, मर्यादाएं बने हुए हैं। हमने अपने नियम बनाकर रखें है, जिस नियम प्रमाण चलना है। नियम को कभी ढीला नहीं करना है। अगर एक बार लूज हुई तो कोई न कोई कारण बनता रहेगा। इसलिए कहते हैं - कायदे में फायदा है। जो कायदे में चलने वाले हैं उन्हें सदा फायदा ही फायदा है। उनके द्वारा औरों को भी फायदा होगा। हर एक को अपने लिए उन्नति के लिए नियम बनाने हैं। उसी प्रमाण चलना है। अपना भला करो तो सबका भला हो। नियम क्या कहता है? हमने नियम बना लिया कि 4 से 8 बजे सवेरे का समय अपने लिए है। भले कितनी ही कारोबार हो, यह समय मेरा अपने लिए है। किसी हालत में भी मुझे और कोई बात न सोचना है, न करना है। उसमें बल मिलता है। इस नियम ने बड़ा बल दिया है। एक क्लास के स्टूडेन्ट हैं, परिवार से प्रेम है, अलौकिक सेवा साथी भी हैं। दूसरा हमें कोई हद में नहीं आना है।

रियल लाइफ **प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक,** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

यह कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा यज्ञ पिता से करा रहे हैं...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

हमने मन में सोचा कि देखो, भाषा-भेद, देश-भेद आदि के आधार पर ऐसे शान्ति सम्मेलनों में 'धार्मिक नेता' कहलाने वाले लोग भी आपस में लड़ते और एक-दूसरे पर कुर्सियां उठाकर फेंकते हैं! धर्म-ग्लानि का यह स्पष्ट लक्षण नहीं तो और क्या है? आज पवित्रता और शान्ति रूपी स्वधर्म को छोड़ कर सभी क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि के वशीभूत हैं। धर्म का तो पहला पाठ ही यह है कि हम सभी आत्माएं हैं और शान्ति हमारा स्वरूप है। परन्तु आज यदि ये प्रतिनिधि लोग भी हिंसा पर उतर आते हैं और स्वरूप को भूलकर देह अभिमान और क्रोध के वशीभूत आसुरी लक्षण अपनाते हैं तो स्पष्ट है कि दैवी सम्पदा का जो प्रायः लोप हो चुका है और अब स्वयं भगवान् के अवतरण का समय है। आज की स्थिति के बारे में कवि ने ठीक ही तो कहा है कि:-

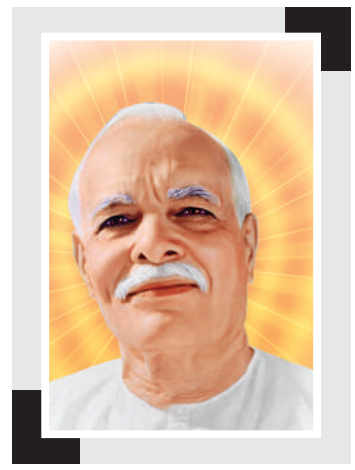

मानव आज बना है दानव, उसका कितना पतन पराभव।
सब हैं हुए देह-अभिमानी, काम-क्रोध-अब अवगुण खानी।
सब में व्यापित क्रोध अहं, मद, कर्म-वचन-मन बिगड़े अनहद।
सारी सृष्टि हो चुकी गंदी, माया के पिंजड़े की बंदी। लुप्त प्रायः सत्-धर्म जगत् में, दूर हुए हैं सब श्रीमत् से।
साधु-सन्त विद्वान अमित हैं, वे भी क्रोध -वश हुए पतित हैं। कौन करे पतितों को पावन? सिवा तुम्हारे हे परमात्मन्!

शिवानन्द जी से वार्तालाप...

एक दिन शिवानन्द जी ने हमसे विशेष वार्तालाप किया। उन्होंने यज्ञ-पिता का कुशल समाचार पूछा और कहा कि सचमुच उनका यह कमाल है कि उन्होंने इतनी माताओं-कन्याओं का ऐसा उच्च जीवन बनाया है। वह बोले - 'क्या आप यज्ञ वत्सों में लड़ाई-झगड़ा नहीं होता? ' हमने कहा- 'नहीं। हमें शिक्षा ही यह मिलती है कि आत्मिक दृष्टि को अपनाना है, दिव्य गुण धारण करने हैं और गुण-ग्राहक बनना है। हम तो सभी एक ईश्वरीय कुल के सदस्यों की तरह रहते हैं। यज्ञ-पिता हैं, यज्ञ-माता हैं और हम उनके धर्म के बच्चे हैं। हम सभी प्रेम से रहते हैं।

शिवानन्द जी बोले -कमाल है! मैंने तो यहां बहुत यत्न किया है कि माताएं भी यहां आध्यात्मिक लाभ उठाएं। मैंने उनके लिए अलग व्यवस्था भी की। परन्तु तीन-चार बार कोशिश करने पर भी मेरा यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ क्योंकि वे आपस में झगड़ पड़ती हैं। आप ढाई-तीन सौ माताएँ- कन्याएँ एक साथ ही 14 वर्ष तक इकट्ठी रही हैं, यह एक बहुत बड़ी बात है। दादा ने यह बहुत अद्भुत और सराहनीय कार्य किया है। दादा से कहना कि वह हमें भी कुछेक माताओं का सहयोग दें जो कि यहां माताओं की क्लास का संचालन करें। तब हमने इन्हें बताया कि यह कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा ही यज्ञ-पिता द्वारा करा रहे हैं। उस सर्वशक्तिमान् परमपिता के सिवा कोई मनुष्य तो यह कार्य कर ही नहीं सकता। उस प्रभु ने ही हमारा जीवन उच्च बनाया है। उस सम्मेलन में भी हमने सभी लोगों को ईश्वरीय साहित्य, निमन्त्रण- पत्र तथा अपना पता दिया था। इस प्रकार ईश्वरीय सेवा करके हम आबू वापस लौट गईं।

अव्यक्त इशारे **राजयोगिनी दादी हृदयमोहनी (गुलजार दादी),** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विदेही माना देह का भान अपने तरफ नहीं खीचें

Q दादीजी हमारा विचार सागर मंथन आप जैसा बनाने के लिए किस बात का अटेन्शन रखें ?

A हम विचार सागर मंथन या मनन किस बात पर करेंगे ? जो बाबा ने दिया है, उसी पर ही मनन करेंगे, मन की बातों पर तो मनन नहीं करेंगे। हम मनन करके कोई बाहर की स्टोरीज़ आदि भी नहीं सुना सकते। वह तो भक्तिमार्ग वाले हमसे अच्छी स्टोरीज़ जानते हैं, सुनाते हैं। जैसे हम बाबा की प्वाइंटस को प्रैक्टिकल में स्वयं अनुभव करके, विस्तारपूर्वक बुद्धि में स्पष्ट करके दूसरों को सुनाते हैं। उसमें अपनी मिक्स नहीं करते। मिक्स करने से आत्माओं को इतना फायदा नहीं होता। अगर कोई स्टोरी रूप में सुनाता है तो वह अपने में फंसाता है और अपने में फंसाना यह बहुत बड़ी गलती है। कहेंगे यह बहन बहुत अच्छी है। यह बहुत अच्छा सुनाती है। अच्छी तरह से स्पष्ट करके सुनाती है। अरे, बहन ने लाया कहां से? बाप से लाया।

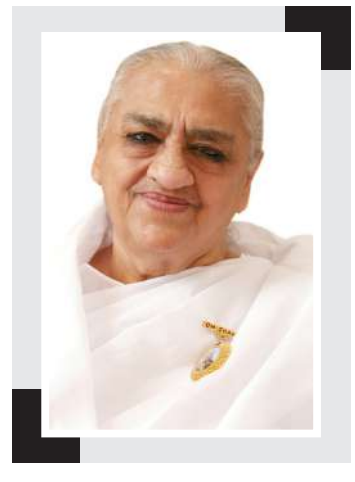

मानो कोई मेरे गुण को देख करके मेरे तरफ़ आकर्षित होते हैं, दादी बहुत अच्छी है, दादी से बहुत कुछ मिलता है, लेकिन दादी ने लाया कहां से? बाबा से लाया ना! मेरे तरफ अगर कोई आकर्षित होता है तो यह वास्तव में हमारी गलती है। ऐसे नहीं मैं बहुत होशियार हूं इसलिए सब मेरे पीछे पड़ते हैं। यह खुशी की बात नहीं है। यह सेवा की सफलता नहीं है। यह आत्माओं को अपने में फँसा के बाबा से बेमुख करना है। बिचारा वंचित रह जाएगा क्योंकि आत्मा को, आत्मा से वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा बाप से ही मिलता है। तो अगर बाप से उसका कनेक्शन नहीं जोड़ा, तो उस आत्मा के कल्याण के निमित्त बनें या अकल्याण के? क्योंकि आजकल की दुनिया बॉडी कान्सेस बहुत है। वह विदेही बाप को बहुत मुश्किल से पहचान सकते हैं, इसलिए देह में फंसना तो उन्हों को आदत है, चाहे अलौकिक देह में, चाहे लौकिक में फंसे - वह तो उन्हों का 63 जन्म का संस्कार है। वह तो जल्दी फंस जाते हैं लेकिन हमको अटेन्शन रखना है कि कोई भी आत्मा मुझ देहधारी की आकर्षण में नहीं आए। गुणों की आकर्षण में भी आते हैं तो भी रांग है, गुण दिया किसने? अच्छा, सेवा में बहुत अच्छी है, सेवा सिखाई किसने ? तो फाउन्डेशन यह होना चाहिए कि जिज्ञासु का बुद्धियोग बाप से जुटे। परमात्मा से उसे कुछ प्राप्ति हो। मेरा भाषण सुनकर सिर्फ अच्छा-अच्छा नहीं कहे। इस बात का बहुत अटेन्शन चाहिए। इसके लिए पहले हमारा कनेक्शन शिवबाबा से ठीक जुटा रहे। इसलिए कभी भी अपना मनन नहीं करना। बाबा की प्वाइन्ट्स का मनन करना और मनन करके बाबा की स्टोरी, बाबा के यज्ञ की कोई स्टोरी है वह भले सुनाओ लेकिन बाहर की स्टोरीज़ नहीं सुनाओ। उसे सुनने में तो मजा आएगा लेकिन प्राप्ति कुछ नहीं होगी, इसीलिए इसका अटेन्शन रखना है।

Q दादी जी, अशरीरी, विदेही और आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव क्या है ?

A विदेही माना देह का भान अपने तरफ खीचें नहीं। हम आत्मा इस देह में हैं, आत्मा बनके शरीर से कर्म करा रहे हैं। आत्मा बनके और उस आत्मिक स्थिति में स्थित होके कर्म भी कर रहे हैं, चल भी रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं- वह आत्म-अभिमानी स्थिति है। शरीर में रहते हुए भी आत्मा जैसे मालिक बनकर कर्म करा रही है। और अशरीरी माना शरीर में हैं लेकिन शरीर के भान में नहीं आवें, बिल्कुल ही जैसे न्यारे हैं। शरीर का भान हमको नीचे नहीं खींचता है। जो विदेही अवस्था है वह है परमधाम की स्टेज। एकदम देह रहित आत्मा, जैसे बाबा देह से मुक्त है! जैसे कि देह है ही नहीं! वैसे हम आत्माएं भी असली रूप में तो देह में थे ही नहीं, पीछे आए पार्ट बजाया फिर हम देहधारी बनें तो विदेही अवस्था जो है वह है परमधाम की स्टेज। जो बिल्कुल ही हम परमधाम में विदेही बाबा के साथ एकदम विदेही स्थिति में स्थित हो जायें। तो इन तीनों स्टेजेस का लगभग साथ-साथ का कनेक्शन है। आत्म-अभिमानी अर्थात् आत्मा कर्मेन्द्रियों का मालिक है। अशरीरी माना कर्म करते शरीर और कर्म के भान से न्यारा हो जाए। विदेही अवस्था है बिल्कुल देह के भान से परे परमधाम निवासी आत्मा बन जाएं। बाकी विस्तार तो बहुत है।

नशामुक्त भारत अभियान : देशभर में

17 राज्य, 602 कार्यक्रम, 95

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल विंग और भारत सरकार के केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधि के देशभर में स्थित सेवाकेंद्रों पर ब्रह्माकुमार भाई-बहनें उत्साह के साथ फैक्ट्री, इंडस्ट्रीज, श्रमिक संघ, स्कूल-कॉलेज में कार्यक्रमों के माध्य मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक हानि के बताते हुए राजयोग मेडिटेशन के फायदों बताए जा रहे हैं। जो लोग नशे की गिरफ्त में हैं औ

रीवा, मप्र

नशा मुक्ति जन जागृति यात्रा में बीके नम्रता के साथ नगर के बुद्धिजीवी समाजसेवी वा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कई राजयोगी उपस्थित रहे।

हिसार, हरियाणा

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में युवाओं को नशा मुक्ति का संकल्प कराया गया। संचालिका बीके रमेश दीदी ने सभी को राजयोग के फायदे बताए।

जबलपुर, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित नशा मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम में बीके भावना, डॉ. पुष्पा पांडे, डॉ. तुषार एवं विजय कटारे सहित कई लोग उपस्थित रहे।

ग्वालियर, मप्र

नशामुक्त भारत अभियान के तहत आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें बीके आदर्श के मार्गदर्शन में बीके भाई-बहनों ने हजारों लोगों को व्यसन मुक्त रहने का संकल्प कराया।

अंबिकापुर, छग

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से संचालिका बीके विद्या के मार्गदर्शन में नशा मुक्त अभियान कार्यक्रम में लोगों को जीवन भर नशे से दूर रहने का संकल्प कराया गया।

बिलासपुर, छग

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। चित्रों के माध्यम से लोगों को नशे की हानियों से रुबरु कराकर संकल्प कराया।

सोनीपत,हरियाणा

ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से निजी कोचिंग संस्थान में नशामुक्त भारत अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके प्रमोद दीदी ने सभी को संकल्प कराया।

छतरपुर, मप्र

विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा डिस्ट्रिक्ट होम कमांडेंट कार्यालय में नशामुक्त भारत अभियान के तहत बीके कल्पना, बीके रीमा ने नशा मुक्ति की शपथ दिलाई।

मुरैना, मप्र

नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नगर में रैली निकाली गई। इस दौरान संचालिका बीके रेखा दीदी ने सभी को नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई।

पन्ना, मप्र

नशामुक्त भारत अभियान के तहत शाउवि के प्राचार्य निशा जैन, पन्ना प्रभारी बीके सीता ने बीके भाई-बहनों को दूसरों को जागरूक करने की सेवा का संकल्प कराया।

ब्रह्माकुमार भाई-बहनें उत्साह से जुटे

5581 लोगों ने लिया संकल्प

कारिता विभाग द्वारा देशभर में चलाए जा रहे नशामुक्त भारत अभियान को अपार सफलता मिल रही है। अभियान को लेकर ब्रह्माकुमारीज़ म से युवाओं, विद्यार्थी और लोगों को नशे से होने वाले दुष्परिणामों से रुबरु कराते हुए दूर रहने का संकल्प करा रहे हैं। नशे से होने वाले र वह छोड़ना चाहते हैं ऐसे लोगों की काउंसलिंग करके मेडिटेशन सिखाया जा रहा है। देश के 17 राज्यों में 602 कार्यक्रम अब तक हुए हैं।

बीना, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में बीके जानकी दीदी, बीके सरस्वती दीदी, बीके गायत्री ने भाई-बहनों को नशे की गिरफ्त में फंसे लोगों की सेवा का संकल्प कराया।

शिवहर, बिहार

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा मंडल कारागार शिवहर में आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी बीके सुनीता दीदी ने सभी बंदी भाई-बहनों को जीवन में सदा नशे से दूर रहने का संकल्प कराया।

कादमा, हरियाणा

कादमा सेवाकेंद्र की ओर से मेरा गांव-नशा मुक्त गांव अभियान चलाया गया। 9 दिन चले अभियान में 26 गांवों को कवर किया। 2690 लोगों को नशा छोड़ने की शपथ दिलाई।

तासगांव, महाराष्ट्र

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से स्वामी रामानंद भारती हाई स्कूल में 1400 विद्यार्थियों के लिए जीवन में सदा नशे से दूर रहने का संकल्प कराया गया। स्कूल प्राचार्य स्टाफ मौजूद रहा।

मदुरई, तमिलनाडु

वेस्ट मासी स्ट्रीट मदुराई में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जागरुकता रैली निकाली गई। इससे लोगों नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया।

पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राज.

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़ के प्रकाश मॉडल स्कूल में बीके रानी दीदी ने नशा मुक्त भारत अभियान के तहत शिक्षकों और स्टाफ सहित 55 लोगों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई।

डोंबिवली,मुंबई

डोंबिवली सेवाकेंद्र द्वारा बीके शकु दीदी के मार्गदर्शन में डोंबिवली पश्चिम रेलवे स्टेशनपर नशामुक्ति प्रदर्शनी लगाई। उद्घाटन स्टेशन प्रबंधक प्रदीप कुमार दास ने किया।

बहादुरगढ़, हरियाणा

दहकोरा गांव की ब्रह्माकुमारी पाठशाला में 'नशा मुक्त मेरा भारत अभियान के तहत 300 लोगों को बीके अंजली, बीके विनीता, बीके अमृता ने शपथ दिलाई।

खजुराहो, मप्र

ग्राम पंचायत भवन बमनौरा में व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी लगाकर ग्रामीणों को व्यसन मुक्त बनने का संदेश दिया। साथ ही सभी को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई।

राजोद, करनाल

राजकीय आईटीआई राजौद ऑफिस में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजयोग का महत्व बताते हुए विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई।

स्व प्रबंधन **बीके ऊषा दीदी,** वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्रह्माकुमारीज़

समझदारी के साथ साहस और निर्भयता भी हो...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

अगर कोई गलत काम कराना चाहते हैं जिससे उस व्यक्ति के चरित्र पर दाग लग सकता है, तो ऐसी स्थिति में प्राण जाएं परन्तु चरित्र न जाए। ऐसी स्थिति में सामना ही करना है, न कि सहन करके अपने चरित्र को दागी बना देना है। अन्यथा जीवनभर इज्जत से जी नहीं पाएंगे और न ही उस पाप के बोझ को उठा पाएगा। तो सहनशक्ति और सामना करने की शक्ति के बीच परखकर यथार्थ निर्णय लेने की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए समझदारी के साथ साहस या निर्भयता का गुण होना चाहिए। इस बात को निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है:-

एक बार पागलखाने में एक पागल किसी तरह अपने कमरे से बाहर निकल गया और तीसरी मंजिल के बाहर छत का जो हिस्सा थोड़ा बाहर निकला था, उस छज्जे पर जा खड़ा हुआ। अचानक अस्पताल के वार्डन ने जब देखा कि वह पागल अपने कमरे में नहीं है तो उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसका ध्यान तीसरी मंजिल के बाहर के छज्जे पर गया। उसने सोचा कि अगर यह रोगी वहां से छलांग लगा देगा या पागलपन में इस पर बेपरवाही से घूमेगा तो यह मर जाएगा। इसलिए कुछ अधिक सोचे बिना वह भागा और स्वयं भी वहां छज्जे पर जा पहुंचा। वहां पहुंच कर उसने पागल से कहा सुनाओ भाई, क्या हालचाल है, यहां क्या कर रहे हो? पागल बड़ी मस्ती से बोला सोच रहा था कि जैसे पक्षी पंख फैला कर उड़ते हुए नीचे उतरता है, मैं भी आज पक्षी के तरह फर्श पर उतरुं । ऐसा कहते हुए पागल ने मुंह भी नीचे की ओर झुकाया और अपनी दोनों भुजाओं और हथेलियों को पीठ के पीछे ले जाकर पंख की तरह रूप दे दिया। वार्डन डर गया और चौंका। उसने पागल को एक हाथ से तो थपथपाया और दूसरे हाथ से उसके हाथ को पकड़ लिया ताकि वह कहीं नीचे छलांग न लगा दे। परन्तु उसने देखा कि पागल में बल बहुत है और वह उसे पकड़ कर रोक नहीं सकेगा। उसे यह भी डर था कि अगर वह पागल को जबरदस्ती रोकेगा तो पागल कहीं उसे ही नीचे धक्का न दे दे । परन्तु मिनटों में ही कुछ हो जाने वाला था। इसलिए जल्दी ही कुछ करना था। अचानक वार्डन को एक युक्ति सूझी। उसने मुस्कराते हुए और दोस्ताना तरीके से पागल को कहा वाह भाई वाह, आप जो करना चाहते हो वह कोई बड़ी बात तो है नहीं। आप तो कोई बड़ा काम करके दिखाओ और मुझे विश्वास है कि आप विशेष काम कर सकते हैं। पागल ने कहा अच्छा, सुनाओ दोस्त, अगर यह बड़ा काम नहीं है तो और क्या चाहते हो? वार्डन ने कहा नीचे चलकर, फर्श से अर्श की ओर एक पक्षी की तरह उड़ कर दिखाओ। पंख तो आपको लगे हुए ही हैं। चलो आओ, हम दोनों एक साथ नीचे से ऊपर की ओर उड़ेंगे। यह कहते हुए वह पागल की अंगुली प्यार से पकड़ते हुए उसे कमरे के रास्ते से नीचे ले चला। इस प्रकार उसने पागल की भी जान बचाई और अपना कर्तव्य भी निभाया। अगर वह पागल से जोर-जबरजस्ती या हाथापाई करता तो दोनों ही धराम से धराशायी होते।

कहने का भाव यही है कि कभी-कभी परिस्थिति का सामना सिर्फ बल से नहीं होता लेकिन समझदारी, शांति, समय सूचकता एवं निर्भयता से भी कर सकते हैं। सहयोग की शक्ति से नफरत और द्वेष की भावना को समाप्त करने के लिए प्रेम और समझदारी का गुण विकसित करना बहुत जरूरी है।

समस्या- समाधान **राजयोगी बीके सूर्य भाई,** वरिष्ठ राजयोग शिक्षक

हर चुनौती नया अवसर लाती है और हमें शक्तिशाली बनाती है

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

हमें स्वयं को अच्छे संकल्प देने हैं और व्यर्थ के प्रति वैराग्य लाना है। हम अच्छे संकल्प देने की कोशिश भी करें और व्यर्थ में रुचि भी रखें होगा नहीं। अच्छे संकल्प आएंगे नहीं जो बुद्धिमान आत्माएं हैं, समझदार आत्माएं हैं उन्हें अच्छी तरह ये पक्का कर लेना चाहिए थोड़ा सा समय रह गया है। सबकुछ लेने का फिर तो माँगेंगे ही, भक्ति में मांग ही मांग रहेगी। थोड़ा सा समय रह गया हैं सतयुग की प्राप्ति से भी बड़ी प्राप्तियाँ करने का। बहुत बड़ा सुख है। यदि आप बाबा का शुक्रिया अदा करने लगो। बाबा से दिल की बातें करना और इसकी शुरुआत करेंगे उसको शुक्रिया करने से, क्या-क्या मिला उससे इसका आनंद लें। इसलिए जो अच्छे पुरुषार्थी हैं क्या-क्या उससे मिला लिस्ट बना लो और एक-एक चीज़ के लिए उसको शुक्रिया करें। बाबा से हमें सुंदर ज्ञान मिला, तीसरा नेत्र मिला। स्व दर्शन चक्र मिला। यह बात सबको नशा नहीं चढ़ाती। ज्ञान की वैल्यू को समझना एक-एक ज्ञान की बात वो है जिसको संसार में लोग द्वापरयुग से खोजते रहे। आप सभी चिंतन करेंगे मेरे व्यर्थ का बीज कहा हैं? कोई चिंता, कोई मोह, कोई अभिमान, लगाव, साधन, मोबाइल, किसी को देखकर परेशान होना, किसी बात की चिंता करना, तुलना करना, बहुत कारण हो सकते हैं। एक बहुत अच्छा स्लोगन हैं हर चुनौती नया अवसर लेकर आती है। हमें लगेगा हमारे सामने बाधाएं आ गईं, यदि हम इनसे निकलना जानते हों तो वो चुनौती हमें शक्तिशाली बना कर जाएगी। इसलिए कभी इन चीज़ों से डरना नहीं है। जिसको आगे बढ़ना है उसको संसार की कोई शक्ति रोक नहीं सकती है। दूसरा संकल्प हमें आगे बढ़ाने वाला स्वयं परमात्मा है। तो आगे बढ़ेंगे और चेक करेंगे व्यर्थ का बीज कहा है। कहीं हमने ख़ुद तो नहीं बो लिया। ईर्ष्या द्वेष भी बहुत बड़ी माया है। बाबा हमारी रोज़ पालना करता है। मुरली बहुत बड़ी पालना है। ऐसे ही बड़ी पालना सवेरे का योग, जिसमें हम स्वयं को चार्ज करते हैं और बाबा हमें वरदान भी देता है।

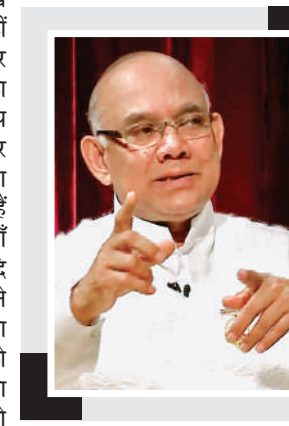

सबेरे बाप सारे खजाने खोलकर बैठता है और भोलानाथ बनकर देता है। हम अधिकार से उसके पास जाकर बैठ जाएं। चाहे परमधाम में जाकर बैठ जाएं, चाहे सूक्ष्मवतन में बापदादा के सामने। बहुत अच्छे अनुभव होंगे। इसलिए स्वर्णिम अवसर को गंवाना नहीं चाहिए। तो सवेरे सुंदर संकल्पों से दिनचर्या की शुरुआत करेंगे। बाबा ने पहले बोला हैं उठते ही ये संकल्प करो मैं आत्मा इस तन में अवतरित हुई हूँ, जैसे शिव बाबा ऊपर से आया ब्रह्मा तन में, मैं आत्मा भी ऊपर से आई इस तन में। जो कुछ हो गया, जो हो रहा है उसे स्वीकार करना हीं है। भविष्य को हमें सुन्दर बनाना है। हम सुबह ये अभ्यास भी कर सकते हैं सुबह उठकर योग कर के, स्वमान का अभ्यास कर के मेरा आज का दिन बहुत अच्छा जाएगा। तीन चार पॉइंट लिख दो मज़ा आएगा आपको अनुभव होता जाएगा जो हम सोच रहे हैं वो होने लगा हैं, हम क्रिएटर हैं, मास्टर भी हैं, आज मेरा दिन खुशियों में बीतेगा, आज मेरा दिन हर कदम पर सफलता लेकर आ रहा है। आज का मेरा दिन निर्विघ्न बीतेगा। आज मैं सारा दिन व्यर्थ से मुक्त रहूंगा। आज सारा दिन जीवन का आनंद लेते हुए दिन बीतेगा। ऐसे जीवन की यात्रा आनंद से बीतेगा, सुख भरा होगा।

भगवान मिला फिर भी दुख ना मिटा तो...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

भगवान कह रहे है मैंने तुम्हें बेगमपुर का बादशाह बनाया, सर्व प्राप्ति स्वरूप बनाया, सुख स्वरूप बनाया ,संपत्ति दी। सबसे बड़ी संपत्ति इस संसार में ज्ञान धन के अतिरिक्त और कोई संपत्ति बड़ी नहीं है। ऐसी ज्ञान धन की अथाह संपदा मैंने दी, ऐसे संबंधों की संपत्ति मैंने दी, उसके बाद भी दुख नहीं मिटा तो इसके छह प्रकार के दुख हैं।

आध्यात्म की उड़ान **डॉ. बीके सचिन,** मेडिटेशन एक्सपर्ट

1. **तन का दुख :** तन की बीमारी आ गई, अब तक सब ठीक था। जैसे ही पता चला कोई बीमारी आ गई है और जैसे ही बीमारी के बारे में पता चला उस दिन से दुख की शुरुआत हो गई। हमें दुखी नहीं होना हैं ये मुझे ही क्यों हुआ, ऐसा क्यों हुआ। आई अच्छा है। हिसाब चुक्तू हो रहा हैं। दुखी नहीं होना है, मिला क्या है? संपत्ति मिली है, धन मिला है ज्ञान का, संबंध मिले हैं, प्राप्ति स्वरूप बने हो, सुखमई संसार में आ गए हो, त्याग का भाग्य है, बेगर से प्रिंस बन गए हो। बीमारी आएगी , हिसाब चुक्तू होगा, कोई नहीं बच सकता है इससे, जिसने जो किया है वो भुगतना पड़ेगा।
2. **मन का दुख :** मन की व्यर्थ संकल्पों की हलचल से दुख की लहर। व्यर्थ संकल्प आ रहे हैं अर्थात ज्ञान के समर्थ संकल्प नहीं हैं अर्थात ज्ञान का चिंतन, मनन, अध्ययन नहीं हैं इसलिए व्यर्थ संकल्प आ रहे हैं। मेरा क्या होगा, मेरी देखभाल कौन करेगा, मेरा साथ देंगे या नहीं देंगे, धोखा तो नहीं देंगे, जिनको आपने अपना कहा वो छोड़ के तो नहीं चले जाएंगे। डर,भय, असुरक्षा व्यर्थ है मन में अर्थात् ज्ञान का अभाव है। ज्ञान का अकाल पड़ा है, ज्ञान केवल डायरियों में ही है बुद्धि में नहीं है। हमें बुद्धि रूपी डायरी में लिखना है।
3. **धन की अप्राप्ति :** ये भी दुख की लहर लाता है। जहां सूक्ष्म धन है वहां स्थूल धन स्वतः आएगा। व्यक्ति स्थूल धन के पीछे इतना भागता है कि सूक्ष्म धन को ही

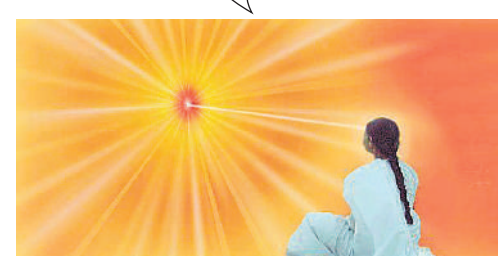

भूल जाता है। जहां सूक्ष्म धन है, स्थूल धन वो खींचेगा, अपने आप आएगा हमें भागना नहीं पड़ेगा।

4. **वायुमंडल और वातावरण :** वायुमंडल और वातावरण में दुख होगा क्योंकि संसार की आत्मा दुखी है, उदास है, दिल शिकस्त है, कुछ नहीं है जीवन में निराशा है और जो आत्मा खुद शक्तिशाली नहीं है, जिसके पास ज्ञान की संपदा नहीं है वो भी उसके ऊपर प्रभाव हो जाएगा उस दुख का। उनके दुख को देखकर खुद भी दुखी हो जाएगा। हम हैं दुःखहर्ता, दुख दूर करने वाले पर खुद ही दुखी हैं। संसार में दुखों के अंबार लगे हुए हैं। किसी भी घर में जाओ दुख ही दुख, सभी दुखी हैं।
5. **स्वभाव संस्कार की कमजोरी:** सबसे ज्यादा दुख व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति नहीं दे रहा है। मेरे अपने संस्कार मुझे दुख दे रहे हैं। मेरे अपने सूक्ष्म विकार के संस्कार, मेरी अपनी सूक्ष्म इच्छाएं, अतृप्त कामनाएं ही मेरे दुःखों का कारण हैं। मेरी अपनी सूक्ष्म नाम, मान, शान की कामना मेरे दुख का कारण है। मेरी अपनी दमित भावनाएं। एक संस्कार व्यक्ति का पीछा कर रहा है, छोड़ता नहीं ऐसा लगता है, समाप्त हो गया है, पर अचानक कहीं से आ जाता है और वही दुख का कारण है।
6. **संबंध-संपर्क का दुख :** संबंध- संपर्क ऐसे बना रखे हैं जिसमें बहुत उम्मीदें हैं, इसलिए दुख है। सेवाएं बहुत कर रहे हैं परंतु सेवाओं के पीछे कामना है। सेवा होने के बाद हमारा नाम लेना चाहिए और अगर हमारा नाम नहीं लिया तो दुख होता। सबका नाम लिया पर मेरा नहीं। हमने तो बहुत सेवाएं की थीं। जो सेवा कर रहा है उसका अपने आप जमा हो रहा है ऊपर और जहां नाम के लिए सेवा होगी, मार्क्स कट हो जाएंगे। अपनी सेवाओं को निष्काम करते जाओ। सेवा कर दी और भूल जाओ। छह प्रकार के दुख से बेगमपुर के बादशाह परे हैं। दुखी होते हैं तो बापदादा भी सोचते हैं क्यों दुखी हुए जरूर कुछ न कुछ किया होगा। कुछ न कुछ संसार का आकर्षण, नकली वस्तु का आकर्षण हुआ। स्वयं को बैठकर समझाना है। हे! मन तू कहां भाग रहा है? हे! बेगमपुर के बादशाहों जागो! गम से जागो! दुख से जागो! यदि अभी नहीं जागे तो फिर सिवाए पछतावे के हमारे हाथ कुछ नहीं आएगा। क्योंकि हमें सत्य का ज्ञान था, सत्य पता था फिर में हम स्थूल में फंसे रहे।

भारत सरकार के युवा एंव खेल मंत्रालय और ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग का संयुक्त अभियान

वाई-20 प्रोजेक्ट : यूथ को इम्पावर करने की नई पहल

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग और भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय द्वारा देशभर में स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती एवं खेल- युवाओं के लिए एजेंडा (हेल्थ वेल वीइंग एंड स्पोर्ट्सः एजेंडा फॉर यूथ) वाई-20 प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है। इसका मकसद युवाओं को इम्पावर कर उनके बेहतर भविष्य का निर्माण करना है। प्रोजेक्ट 12 अगस्त 2023 तक चलाया जाएगा। इसमें अब तक संस्थान द्वारा देश के अलग-अलग शहरों में मेगा कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष और ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, उपाध्यक्ष राजयोनिगी बीके चंद्रिका दीदी और मुख्यालय संयोजक बीके आत्मप्रकाश भाई के मार्गदर्शन में इसे चलाया जा रहा है।

इन संस्थाओं में चल रहे कार्यक्रम

स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, सामाजिक संस्थाओं, नेहरु युवा केंद्र, एनसीसी, एनएसएस, रोटरी क्लब, लायंस क्लब व अन्य संगठनों में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें युवाओं को डिजिटल डिटॉक्स, पारंपरिक चिकित्सा और योग, स्वस्थ युवा, स्वस्थ भारत, स्वस्थ आदतों का निर्माण, अच्छे प्रदर्शन के लिए अच्छी योजना, आत्मसम्मान का निर्माण, व्यसन मुक्त जीवन शैली, हम जीतेंगे आदि विषयों पर मार्गदर्शन करते हैं।

नई दिल्ली में केंद्रीय आयुष मंत्री और बीके शिवानी ने की नेशनल लांचिंग...

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे हेल्थ वेल वीइंग एंड स्पोर्ट्सः एजेंडा फॉर यूथ (वाई-20) प्रोजेक्ट की नेशनल लांचिंग दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू इंडोर वेटलिफ्टिंग ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह में केंद्रीय आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने की। इस मौके पर त्रिनिदाद और टोबैगो के उच्चायुक्त डॉ. रोजर गोपाल, ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, राजयोगिनी गीता दीदी, राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी, राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी, मोटिवेशनल वक्ता बीके शिवानी दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

12 अगस्त 2023 तक चलाया जाएगा प्रोजेक्ट

15 से 20 वर्ष के युवाओं के लिए बनाया गया है ये प्रोजेक्ट

20 प्रोग्राम अब तक देशभर में हुए

2500 युवाओं ने लिया भाग

ये कार्यक्रम हैं शामिल
- टॉक शो व सेमीनार
- डायलाग्स
- कॉन्फ्रेंस
- पीस मार्च
- प्रदर्शनी
- रिट्रीट
- प्रतियोगिताएं

समाज को जोड़ रही है संस्था

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मानव समाज को शांति और प्रेम के मार्ग पर ले जाने का श्रेष्ठ कार्य कर रही है। संस्था ने केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सम्पूर्ण मानव समाज को भी जोड़ा है। मात-पिता, समाज, देश और दुनिया के लिए सद्भावनाएं जरूरी हैं। इन सब बातों का ज्ञान नई पीढ़ी के लिए आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था घृणा, छल, कपट, नफरत और अहम के विष को मानव मात्र के अंदर से निकाल कर राजयोग का संदेश दे रही है। शांति केवल सकारात्मक सोच और श्रेष्ठ संस्कारों द्वारा ही आ सकती है। श्रद्धा और परमात्म योग वा ध्यान के बिना सच्ची शक्ति व शांति नहीं मिल सकती है। सच्ची भगवत प्रेम और निस्वार्थ भावना से ही हम समाज की सर्वांगीण सेवा व विकास कर सकते हैं।

– **सर्बानंद सोनोवाल,** केंद्रीय आयुष मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

संकल्प शक्ति से युवा खुद को मजबूत बनाएं: विधायक

शिव आमंत्रण, हिसार (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ विंग की ओर से वाई-20 प्रोग्राम पीस पैलेस बालसमंद रोड में आयोजित किया गया। इसमें विधायक रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि अपने विचारों को सकारात्मक बनाकर अपने आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाया जा सकता है। युवा अपने आपको मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाएं। भाई-बहनों ने नशे के दुष्प्रभाव पर एक नाटक प्रस्तुत किया। बीके रमेश दीदी ने युवाओं को संकल्प कराया कि कभी भी नशा नहीं करेंगे।

आध्यात्म को जीवन में शामिल करने से होगा आसानः विधायक

शिव आमंत्रण, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ विंग की ओर से वाई-20 प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें युवाओं को लिए जिला परिषद अध्यक्ष कंवलजीत कौर, विधायक सुभाष सुधा, जिला परिषद उपाध्यक्ष धर्मपाल सिंह, यूथ विंग के नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके अरुण, कुरुक्षेत्र सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज दीदी, बीके शिवाली ने संबोधित किया। विधायक ने कहा कि आध्यात्म को जीवन में शामिल करने से जीवन आसान हो जाता है। टॉक शो के दौरान कुमारी गुंजन ने नृत्य प्रस्तुत किया।

कॉलेज विद्यार्थियों को मन की एकाग्रता बढ़ाने के टिप्स बताए

शिव आमंत्रण, फरीदाबाद (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ विंग द्वारा वाई-20 कार्यक्रम संजय एनक्लेव सेवाकेंद्र द्वारा गवर्नमेंट कॉलेज खेरी गुजरान में आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता बीके प्रिया बहन ने युवाओं को मोटिवेट किया। प्रिंसिपल सुनीता मलिक ने युवाओं को अपने जीवन के अनुभव से प्रेरित किया। प्रोग्राम के अंतर्गत पैनल डिस्कशन भी रखा गया, जिसमें पैनलिस्ट के रूप में बीके पूजा, बीके ज्योति, बीके सीमा, बीके हरिकिशन, प्रिंसिपल सुनीता मलिक और प्रोफेसर विजेंद्र थे।

नवनिर्मित 'प्रभु गुंजन' भवन समाज के लिए समर्पित

शिव आमंत्रण, जयपुर।

ब्रह्माकुमारीज़ के वैशाली नगर जयपुर सबजोन की ओर से वृन्दावन कॉलोनी झोटवाड़ा में ईश्वरीय सेवाओं की वृद्धि को देखते हुए बनाए गए प्रभु गुंजन भवन समाज के नाम समर्पित कर दिया गया। अब यहां से शहरवासी योग, ध्यान, आध्यात्म और मूल्य शिक्षा निःशुल्क ले सकेंगे। सुबह-शाम राजयोग मेडिटेशन का कोर्स कराया जाएगा।

शुभारंभ कार्यक्रम में यूरोपीय सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि परमात्मा शिव कल्याणकारी है। 95 देशों में मुझे एक भी देश नहीं मिला जहां परमात्मा के हीरे नहीं मिले हो। वो न हिन्दू थे, न मुस्लिम, न किसी और धर्म के वो सिर्फ एक परमात्मा को प्यार करने वाले लोग थे। यह प्रभु गुंजन भवन भी ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाते हुए परमात्मा के हीरे तराशने का काम करेगा। रूहानी क्रांति से ही युग परिवर्तन होता है। युग परिवर्तन के इस दौर में कल्याणकारी परमात्मा शिव दुनिया में अपने बच्चो को निमित्त बनाकर काम कर रहे हैं। बता दें कि सुदेश दीदी ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं और इंग्लैंड, जर्मनी समेत 95 से भी अधिक देशों में सेवाएं दे चुकी हैं।

राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेल्थ साइंसेज के डॉ. सुधीर भंडारी, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर आरएल रैना, मद्रास हाई कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस नागेंद्र कुमार जैन, अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष जसबीर सिंह, जयपुर सब ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी, धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा एवं प्रयागराज सबज़ोन की प्रभारी राजयोगिनी बीके मनोरमा दीदी, जयपुर वैशालीनगर सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके चन्द्रकला दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहे।

माउंट आबू स्थित ग्राम पंचायत ओरिया और ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गांव को संवारने में किए जा रहे हैं नए-नए प्रयोग

ब्रह्माकुमारीज़ और ओरिया पंचायत के प्रयासों से बदली चौपाल की सूरत

शिव आमंत्रण, माउंट आबू/राजस्थान।

माउंट आबू स्थित ग्राम पंचायत ओरिया को आदर्श राजऋषि गांव बनाने के लिए अब ग्रापं के साथ ब्रह्माकुमारीज़ भी कदम से कदम मिलाकर चल रही है। हाल में ही ब्रह्माकुमारीज़ और पंचायत के सहयोग से एक सार्वजनिक चौपाल की सूरत बदल दी, जिसे देखने जिला पंचायत सीईओ डॉ. टी. शुभमंगला टीम के साथ पहुंचीं। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ और पंचायत द्वारा गांव को सजाने और संवारने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। इस मौके पर रेडियो मधुबन के डायरेक्टर बीके यशवंत, युवा प्रभाग से बीके जीतू, जल विभाग के बीके चंद्रेश मुख्य रूप से मौजूद रहे।

जल संरक्षण के लिए किया जागरूक

संस्थान द्वारा चलाए जा रहे जल जन अभियान के अन्तर्गत खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में योजना के तहत जल संरक्षण के लिए ओरिया के ग्रामीणों को जागरूक किया। इस मौके पर जाहोटा सरपंच श्याम प्रताप राठौड़, जिला परियोजना समन्वयक चंदू खान, ओरिया की सरपंच शारदा देवी, वन विभाग से शेरसिंह भाई, ग्लोबल हॉस्पिटल से बीके कल्पना दीदी, बीके प्रियंका, बीके चंद्रेश, बीके शिवानंद, बीके मंगलसेन, उपसरपंच तरुण सिंह मुख्य रूप से मौजूद रहे।

बालिका छात्रावास में दिया जल बचाने का संदेश

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)।

महोबा रोड स्थित शासकीय उत्कृष्ट सीनियर बालिका छात्रावास में जल जन अभियान को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया। बता दें कि ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से जन जल अभियान चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में बीके सुमन और बीके मोहिनी ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस जीव जगत के लिए जल एक ईश्वर प्रदत्त अमूल्य वरदान है। इस वरदान को यदि सहेजा नहीं गया तो वह दिन दूर नहीं कि जल के बिना इस धरती पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अब समय है कि जन-जन को जल बचाने की मुहिम चलानी चाहिए तभी भारत सरकार का जल जन अभियान सफल हो सकेगा और ऐसा करके हम सभी प्रकृति की भी मदद कर पाएंगे। बीके कल्पना एवं बीके रीमा द्वारा बालिकाओं को अनेक प्रकार की एक्टिविटीज और मेडिटेशन के माध्यम से स्वयं को सशक्त बनाकर सर्व को सशक्त बनाना है और जल बचाने की प्रतिज्ञा कराई गई। छात्राओं ने कहा हम जल जरूर बचाएंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ सदस्यों की सेवा भावना से हमें भी सीख लेनी चाहिएः डीआईजी

शिव आमंत्रण, मोकामा/बिहार।

ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा आरपीएफ मोकामा ट्रेनिंग सेन्टर में एक दिवसीय राजयोग ध्यान सत्र कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी निशा दीदी ने जवानों को राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए राजयोग से होने वाली सुखद अनुभूति का अहसास कराया। इस दौरान आरपीएफ के उपकमांडेंट पी. करुप्पुस्वामी, सीआरपीएफ ट्रेनिंग सेंटर से आए डीआईजी वीरेन्द्र भगत ने ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के सदस्यों के त्याग-तपस्या और सेवा भावना से हमें भी सीख लेनी चाहिए। हमें किसी को आगे बढ़ता देख उसकी टांग नहीं खींचना चाहिए। बीके नमन भाई ने संस्था का दिया। इस दौरान आरपीएफ इंस्पेक्टर मनोज होरो, सीआरपीएफ से सब कमांडेंट विकास कुमार, सूबेदार मेजर शिव शंकर सहित ट्रेनिंग के लिए आए जवान मौजूद रहे।

जल का विवेकपूर्ण प्रयोग करने का लिया संकल्प

बिलासपुर/राजकिशोरनगर (छग)।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पूरे भारत में 22 से 28 मार्च तक जल सप्ताह मनाया गया। इसी श्रृंखला में राज किशोर नगर स्थित शिव अनुराग भवन सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजू दीदी ने सभी को जल का विवेकपूर्ण प्रयोग कर जल संरक्षण करने संकल्पित कराया। उन्होंने कहा कि जल अनमोल निधि है। स्वयं तो जल को बर्बाद करें ही नहीं, साथ ही अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों और पड़ोसियों को भी जल का युक्तियुक्त प्रयोग और जल की एक बूंद भी बरबाद नहीं करेंगे ऐसी शपथ दिलाई। रेलवे क्षेत्र से मुख्य भंडार सामग्री प्रबंधक ओमप्रकाश सिंह, पूर्व थाना प्रभारी इन्द्र नारायण सिंह, राजेन्द्र कुमार गुप्ता, शान्तनु सिंह, बीके रूपा, बीके ज्ञाना, बीके हेमवती, बीके शशी, बीके गायत्री, बीके पूर्णिमा, बीके ईश्वरी, बीके श्यामा, बीके नीता, बीके प्रीति विशेष रूप से मौजूद रहीं।

ग्वालियर में निकाली स्वच्छता मशाल से दिया सफाई का संदेश

शिव आमंत्रण, ग्वालियर (मप्र)।

नगर निगम ग्वालियर द्वारा आयोजित स्वच्छता मशाल मार्च कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भाई-बहनों ने माधौगंज से महाराज बाड़े तक पैदल यात्रा निकाल कर स्वच्छता का संदेश दिया। महाराज बाड़े पर आयोजित कार्यक्रम में महापौर डॉ. शोभा सिंह सिकरवार, निगम कमिश्नर किशोर कन्याल, डिप्टी कमिश्नर अमर सत्य गुप्ता, डिप्टी कमिश्नर अतिबल सिंह यादव, ब्रह्माकुमारीज़ की लश्कर की संचालिका बीके आदर्श दीदी, बीके ज्योति दीदी, बीके प्रहलाद सहित निगम के पदाधिकारी एवं पार्षदगण मुख्य रूप से मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960
Scan To Pay

चार दिवसीय सेल्फ अवेकनिंग एवं सिंधी स्नेह मिलन शिविर आयोजित

आत्मा समझकर परमात्मा को याद करेंगे तो जन्मोंजन्म का भाग्य बन जाएगा : दादी

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित चार दिवसीय सेल्फ अवेकनिंग एवं सिंधी स्नेह मिलन शिविर का शुभारंभ सोमवार को विश्व सिंधी भाषा दिवस पर किया गया। इसमें गुजरात, राजस्थान सहित देश के अन्य राज्यों से 400 से अधिक सिंधी समाजजन पहुंचे हैं। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आप सभी सिंधु भाई-बहनों का परमात्मा के घर में स्वागत है। खुद को बिंदी समझकर ज्योतिर्बिंदु परमात्मा को याद करेंगे तो हमारा जन्मोंजन्म का भाग्य बन जाएगा। परमात्मा हम सभी आत्माओं के परमपिता हैं।

मीडिया निदेशक बीके करुणा ने कहा कि सिंधु नदी की संस्कृति का वर्णन आज भी हमारी किताबों में है। ब्रह्मा बाबा द्वारा शिव बाबा ने जो ज्ञान सुनाया कि हम सभी आदि देवी-देवता सनातन संस्कृति के हैं। भारत का पहला धर्म देवी-देवताओं का धर्म था। बाबा ने हमें बताया कि हम सब सनातनी हैं। आप ऐसी संस्कृति में आए हैं जहां हम सब एक संस्कृति के हैं। आप सभी सनातन, देवी-देवता धर्म के हैं। बाबा ने सतयुग लाने का प्रयास किया। बाबा ने हमें ज्ञान दिया कि आप एक आत्मा हैं। शरीर खत्म हो जाता है लेकिन आत्मा सदा रहती है। ईश्वर इस सृष्टि पर सतधर्म की स्थापना करने आते हैं। ब्रह्मा बाबा भी सिंधी थे। बहुत रॉयल और साधारण थे। एक ईश्वर, एक विश्व, एक परिवार की स्थापना का कार्य संस्था कर रही है।

राजयोग से मन होता है शांत

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शीलू दीदी ने कहा कि सिंधी समाज का दुनिया में बड़ा योगदान है। आपने व्यापार में नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं। अब आध्यात्म में भी नई ऊंचाइयों को छूना है। राजयोग मेडिटेशन से हमारा मन शांत होता है और शक्तिशाली होता है। हीरो थरनानी ने कहा कि यहां आकर बहुत शांत की अनुभूति हुई। विनोद मूलचंदानी ने कहा कि वर्तमान में हम सभी को आध्यात्म की जरूरत है। मुरली अडानी ने कहा कि संस्था द्वारा सराहनीय कार्य किए जा रहा हैं। हिना सद्दापुरी, अजीत मनीयाल, डॉ. राजू वी मनवानी, मनोहर पमनानी, दीपक केवलरामनी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ा रहे हैं परमात्मा

संचालन करते हुए बिलासपुर से आईं बीके राखी ने कहा कि परमात्मा इस धरा पर आकर हम सभी आत्माओं को एकता और वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाते हैं। परमात्मा हमें ज्ञान देकर नई सतयुगी, स्वर्णिम दुनिया की स्थापना का महान कार्य कर रहे हैं। स्वागत गीत गायक बीके भानु भाई और बीके युगरतन भाई ने प्रस्तुत किया। कुमारी निशा ने स्वागत नृत्य पेश किया। आभार बीके बीना ने माना।

मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के वाइंस चांसलर ने प्रदान की उपाधि

मोहिनी दीदी और जयंती दीदी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा

आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी दीदी और बीके जयंती दीदी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। शांतिवन के डायमंड हाल में आयोजित समारोह में मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. हरि कुमार, टेक्निकल ऑफिसर प्रो. राजेश पी चिन्तवाड़ी, रजिस्टार प्रो. हंसराज श्रीवास्तव और प्रो. देवेश वारी देवी ने यह उपाधि प्रदान करते हुए प्रमाण पत्र प्रदान किया।

वाइस चांसलर डॉ. हरि कुमार ने कहा कि आज हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मानवता की सेवा, नारी सशक्तिकरण और जन कल्याण, आध्यात्म और राजयोग के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा जीवन समर्पित कर लाखों लोगों की प्रेरणास्रोत बनीं राजयोगिनी मोहिनी दीदी और राजयोगिनी जयंती दीदी को मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी की ओर से डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की जा रही है। आप लोगों को जीवन में योग और राजयोग की मिसाल है। आपके मार्गदर्शन और जीवन को देखकर अनेक लोगों का जीवन बदला है। वैल्यु एजुकेशन प्रोग्राम के डायरेक्टर डॉ. पांड्यामणि, कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, टेक्निकल ऑफिसर प्रो. राजेश पी चिन्तवाड़ी, रजिस्टार प्रो. हंसराज श्रीवास्तव और प्रो. देवेश वारी देवी सहित बड़ी संख्या में बीके भाई-बहन मौजूद रहे।

राजस्थान, महाराष्ट्र और दिल्ली के दिव्यांग क्रिकेट खिलाड़ियों का किया सम्मान

आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन पहुंचने पर दिव्यांग क्रिकेट खिलाड़ियों का वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सम्मान कर हौसला बढ़ाया। ये सभी खिलाड़ी राजस्थान, महाराष्ट्र और दिल्ली से पहुंचे हैं। तीनों राज्यों के बीच माउंट आबू के पोलो ग्राउंड में दो दिवसीय टी-20 हिल्स प्रीमियर लीग व्हीलचेयर क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि आप सभी का परमात्मा के घर में स्वागत है। आपको अपने जीवन से ऐसे कार्य करना है जो दूसरों के लिए मिसाल बनें। हम तन से भले दिव्यांग हैं लेकिन मन यदि शक्तिशाली है, शुभ संकल्पों से भरा है, महान संकल्पों से भरा है और परमात्मा की मदद से हम दुनिया की हर समस्या का सामना कर सकते हैं। जर्मनी की निदेशिका बीके सुदेश दीदी और मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, डॉ. बीके सविता दीदी ने भी सभी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया और दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया। बीके मोहन, बीके सूर्यमणि, बीके आरुषी, बीके कृष्णा भी मौजूद रहीं।

सिमराही बाजार सेवाकेंद्र पर स्नेह मिलन समारोह आयोजित

मूल्य शिक्षा से जीवन बनेगा सशक्त और सकारात्मक

शिव आमंत्रण, सुपौल (बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ के सिमराही बाजार ओम शांति भवन सेवाकेंद्र पर स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। इसमें नेपाल की डायरेक्टर राजयोगिनी राज दीदी ने कहा कि एक आदर्श समाज में नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्य प्रचलित होते हैं। नैतिक मूल्यों का हमें सम्मान करना चाहिए। मूल्य शिक्षा द्वारा ही बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। मूल्य शिक्षा से ही जीवन को सशक्त, सकारात्मक और विकसित बना सकती है। जीवन में कार्यकुशलता, व्यावसायिक दक्षता, बौद्धिक विकास एवं विभिन्न विषयों के साथ आपसी स्नेह, सत्यता, पवित्रता, अहिंसा, करुणा, दया इत्यादि मानवीय मूल्यों के पाठ भी हम सभी को पढ़ना जरूरी है। क्योंकि वर्तमान के युवा भावी समाज है। काठमांडू नेपाल से आए हुए ई. राम सिंह एन ने कहा कि जीवन में नैतिक शिक्षाओं को आचरण में लाना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। सीमांचल एवं जोगबनी सबजोन प्रभारी किरण दीदी ने कहा कि जब तक जीवन में आध्यात्मिकता नहीं अपनाते हैं तब तक जीवन में मानवीय नैतिक मूल्य नहीं आ सकते हैं। सद्गुणों की धारणा से ही हम प्रशंसा के पात्र बन सकते हैं।

सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बबीता दीदी ने कहा कि राजयोग से ही हमारा मनोबल और आत्मबल बढ़ता है। संचालन बीके रंजू दीदी ने किया। समाजसेवी डॉ. वीरेंद्र प्रसाद, किशोर भाई, शकुंतला देवी, सावित्री देवी, इंद्रदेव भाई, मधु देवी सहित बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, करेली(मप्र)।

श्रीराम मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया गया। इसके समापन पर ब्रह्माकुमारीज़ से बीके अंजना दीदी, विनीता दीदी, शिवानी दीदी और भाई-बहनों ने कथावाचक पं. आनंद कृष्ण शास्त्री से मुलाकात कर उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की। रामनवमीं पर नवयुवक बानर सेना, सकल सनातन हिन्दू समाज, आरएसएस, बजरंग दल द्वारा निकाली शोभायात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राम दरबार की मनमोहक झांकी सजाई गई।

शिव आमंत्रण, इंदौर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के कालानी नगर सेवाकेंद्र पर परमात्म अवतरण द्वारा स्वर्णिम भारत की ओर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अतिथि के रूप में इंदौर के पूर्व महापौर एवं सांसद कृष्णमुरारी मोघे, आईआरसीटीसी के स्वतंत्र निदेशक विनय कुमार शर्मा, जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड से पधारीं डॉ. साधना राज, पूर्व राज्य मंत्री पं. योगेंद्र महंत, वार्ड 3 की पार्षद शिखा संदीप दुबे, ब्रह्माकुमारी जयंती दीदी, ब्रह्माकुमारी सुजाता दीदी उपस्थित रहीं।

शिव आमंत्रण, जोधपुर/राजस्थान। शहर में विराट संत सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से संत-महात्माओं सहित महामंडलेश्वर शिवस्वरूपानंद महाराज, महामंडलेश्वर प्रेमानंद महाराज मुंबई, स्वामी स्वाति महाराज ने भाग लिया। साथ ही छत्तीसगढ़ के राजिम-नवापारा सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी पुष्पा दीदी और इंदौर जोन के धार्मिक प्रभाग के जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नारायण भाई को विशेष रूप से अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संत समाज के लिए की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। साथ ही संस्थान द्वारा दिए जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया।

नवनियुक्त राज्यपाल का किया स्वागत

शिव आमंत्रण, इंफाल (मणिपुर)। मणिपुर की नवनियुक्त राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके से राजभवन में मुलाकात कर ब्रह्माकुमारीज़ के मणिपुर की प्रभारी बीके नीलिमा दीदी ने सम्मान किया।

बीके छाया को सुषमा स्वराज्य अवार्ड से नवाजा

शिव आमंत्रण, बड़वानी(मध्यप्रदेश)। भाजपा महिला मोर्चा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सेंधवा सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी छाया दीदी को सुषमा स्वराज्य अवार्ड -2023 से सम्मानित किया गया। सांसद गजेन्द्र पटेल एवं महिला मोर्चा अध्यक्ष माया बहन ने स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। सांसद पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें सर्वस्व त्यागकर समाज, परिवार में शांति लाने का कार्य निरंतर करती जा रही हैं। कार्यक्रम में सुषमा स्वराज सम्मान जिले की 10 विशिष्ट महिलाओं को उनके द्वारा समाज में की गई विशेष सेवाओं के फलस्वरूप प्रदान किया गया।

'जीतने का मनोविज्ञान' कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, संबलपुर/ओड़िशा। गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से जीतने का मनोविज्ञान और खुश रहने की कला विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुंबई से प्रसिद्ध स्पीकर बीके ईवी गिरीश और बीके दीपा दीदी ने विद्यार्थियों को उपरोक्त विषय पर संबोधित किया। इस दौरान मनोविज्ञान विभाग की हैड प्रो. संजुक्ता पाढ़ी, बीके स्मिता दीदी, बीके दीपा दीदी भी मौजूद रहीं।

शोभायात्रा का 15 क्विंटल फूलों से स्वागत

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)। रामनवमीं पर नगर में सर्व समाज और सर्व संगठनों के बैनर तले निकाली गई चार किमी लंबी शोभायात्रा का ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से 15 क्विंटल फूलों से स्वागत किया गया। इस दौरान बीके बहनों ने कलश लेकर राम दरबार की सुंदर झांकी भी सजाई। सेवाकेंद्र निदेशिका बीके शैलजा दीदी ने बताया कि शोभायात्रा में श्रद्धालुओं के लिए शीतलपेय से भी स्वागत किया गया।

नेपाल टीम ने राष्ट्रपति से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से ब्रह्माकुमारीज़ की नेपाल टीम द्वारा मुलाकात कर पशुपतिनाथ के स्मृति चिंह्न भेंट किया। इस मौके पर नेपाल प्रभारी बीके राजयोगिनी राज दादी, बीके किरण दीदी, बीके रामसिंह ऐर, बीके तिलक शाही, बीके दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

कोलकाता में राष्ट्रपति को स्मृति चिंह्न भेंट किया

शिव आमंत्रण, कोलकाता।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के कोलकाता आगमन पर राजभवन में ब्रह्माकुमारीज़ की ईस्टर्न जोन की इंचार्ज बीके बीके कानन दीदी, बीके मुन्नी दीदी, बीके शेफाली दीदी, बीके बांकुरा ने मुलाकात कर स्मृति चिंह्न भेंट किया।

विदेशों कलाकारों ने भांगड़ा की प्रस्तुति से मन मोहा

शिव आमंत्रण, माउंट आबू।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर अकादमी में स्नेह मिलन समारोह में रशियन कलाकारों द्वारा संगीत संध्या आयोजित की गई। इसमें मलेशिया, इंडोनेशिया, रूस, यूक्रेन, जॉर्जिया और भारत के बीके भाई-बहनों द्वारा प्रस्तुत गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी गई। सेंट पीटर्सबर्ग, रूस के 'डिवाइन लाइट सांस्कृतिक समूह के सदस्यों ने रूसी लोकनृत्य, पंजाबी भांगड़ा की जोरदार प्रस्तुति दी। साथ ही सभी कलाकारों ने मिलकर मेरे जीवन में जो कुछ भी है वह आप हैं... गीत पर अपनी प्रतिभा दिखाई। सर्व आत्माओं के परम पिता, सर्वोच्च कलाकार का महत्व बताया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व सेंट पीटर्सबर्ग रूस 'डिवाइन लाइट' सांस्कृतिक समूह की निदेशक संतोष दीदी ने किया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारी, प्रशिक्षु जवान और परिजन मौजूद रहे। सीआरपीएफ डीआईजी डीएस राठौड़ी, सुरक्षा सेवा विंग के राष्ट्रीय समन्वयक कर्नल बीसी सती ने संबोधित किया।

नारी शक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों को जगाए

शिव आमंत्रण, बैतूल (मप्र)। दैनिक भास्कर समाचार पत्र द्वारा केसरबाग में आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की संचालिका बीके मंजू दीदी को आध्यात्म के क्षेत्र में विशेष सराहनीय कार्य करने पर बेस्ट वूमेन अवार्ड - 2023 से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड विधायक हेमंत खंडेलवाल, नपाध्यक्ष पार्वत बारस्कर और भास्कर समूह के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सौंपा।

रीवा : विधानसभा अध्यक्ष का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, रीवा, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पधारने पर मप्र के विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम का संस्थान की ओर से संचालिका बीके निर्मला दीदी और बीके प्रकाश भाई की ओर से सम्मान किया गया। साथ ही संग्रहालय का अवलोकन कराकर संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं की जानकारी दी।

चीन में बताया राजयोग मेडिटेशन का महत्व

शिव आमंत्रण, ग्वांगझू (चीन)। ग्वांगझू में अफ्रीकी एलीट समूह के नेतृत्व में प्रवासी समुदाय द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। चीन में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके सपना दीदी वक्ता के रूप में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस दौरान उन्होंने भारतीय पुरातन संस्कृति आध्यात्म का महत्व बताते हुए सभी से जीवन में राजयोग मेडिटेशन अपनाने का आह्वान किया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही विश्वस्तरीय सेवाओं से सभी को रुबरु कराया। कार्यक्रम में तंजानिया के राजदूत और युगांडा के राजदूत भी उपस्थित रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

सख्ती से 'शक्ति'

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। सख्ती, कोठरता, दृढ़ संकल्प। संकल्प के साथ जब दृढ़ता का समावेश हो जाता है तो वह इच्छाशक्ति में बदल जाता है। किसी संकल्प को पूरा करने में हम पूरी शक्ति, सामर्थ्य, दृढ़ता के साथ जीजान से जुट जाते हैं और अंत तक जुटे रहते हैं तो परिणामस्वरूप वह संकल्प साकार रूप लेकर शक्ति में बदल जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में सख्ती अर्थात् दृढ़ता बेहद जरूरी है। दुनिया में बड़े-बड़े बदलाव और महान व्यक्तित्वों का निर्माण दृढ़ संकल्प के बल पर ही हुआ है।

जब तक घड़े को आग की तपन से नहीं गुजारा जाता है तो उसमें शीतलता प्रदान करने का गुण विकसित नहीं होता है। ऐसे ही किसी सिद्धांत को प्रतिपादित करने में जब तक हम पूरे सामर्थ्य, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ खुद के साथ सख्ती से पेश नहीं आते हैं तब तक वह सिद्धांत, गुण या विशेषता उदाहरणमूर्त नहीं बनती है। जो जितना महान हुआ है, वह जीवन में उतनी ही समस्याओं, परिस्थितियों रूपी यज्ञकुंड में तपकर निकला है। इतिहास में ऐसे महापुरुषों की कहानियां भरी पड़ी हैं जो सिद्धांतों का पालन करने में विपरीत हालात में भी अडिग रहे। यही कारण है उनकी विशेषता या गुण का हम गुणगान करते हैं। यह तभी संभव हो पाया जब उन्होंने महान लक्ष्य को पाने में पूरी शिद्दत के साथ खुद को झोंक दिया। परिणामस्वरूप वह उनकी शक्ति बन गई। लोहे को गर्म किए बिना मनचाहे सांचे में ढालना मुमकिन नहीं है। ऐसे ही दृढ़ संकल्प के बिना कोई महान कार्य संभव नहीं है।

आंतरिक सशक्तिकरण से लक्ष्य पाना हो जाता है आसान-

जितना हम आंतरिक रूप से सशक्त और शक्तिशाली बनते जाते हैं तो असंभव सा दिखने वाला महान लक्ष्य आसान नजर आने लगता है। किसी श्रेष्ठ संकल्प को साकार करने, उसके पदगामी बनने और जीवन को आदर्शों के साथ जीने के लिए दृढ़ संकल्पित होना पहली सीढ़ी है। हम भले दूसरों के प्रति नरम रहें, लेकिन खुद के प्रति सदा सख्त और कड़ा रुख अपनाना होगा। क्योंकि नियम-मर्यादाएं यथार्थ रूप में तभी पालन हो पाती हैं जब उन पर चलने के लिए दृढ़ संकल्पित रहते हैं। युगपुरुष स्वामी विवेकानंदजी कहते हैं- विश्व एक व्यायामशाला है जहां हम खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए आते हैं। आचार्य चाणक्य कहते हैं- एक उत्कृष्ट बात जो शेर से सीखी जा सकती है वो ये है कि व्यक्ति जो कुछ भी करना चाहता है उसे पूरे दिल और जोरदार प्रयास के साथ करे।

खुद पर गौर करने से ही विकसित होती हैं अच्छी आदतें-

यदि शिक्षक अपने विद्यार्थी के साथ कठोरता से पेश न आए तो छात्र पढ़ाई के प्रति गंभीर और सजग नहीं होगा। वह लापरवाही करेंगे और होमवर्क भी नहीं करेंगे। ऐसे में उनके उज्जवल भविष्य का निर्माण संभव नहीं है। प्रायः देखने में आता है कि जो शिक्षक अपने छात्रों के प्रति जितने कठोर और सख्त रहे उनके छात्र उतने ही प्रतिभावान होकर निकले। विरले उदाहरण ही देखने को मिलते हैं कि बचपन से ही किसी बच्चे में कुछ करने का जुनून और लगन होती है। इसी तरह यदि हमें अपने शरीर को स्वस्थ, तंदुरुस्त रखना है तो सख्ती के साथ नियमित व्यायाम करना, थकाना और पसीना बहाना जरूरी है। जब शरीर के प्रति सख्त रवैया अपनाएंगे तो परिणामस्वरूप उसमें नई शक्ति का संचार होगा। इसी तरह अपने विचारों के धरातल पर कोई नया विचार, नई सोच, नया सिद्धांत लागू या आत्मसात करना है तो दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ना होगा। इस प्रक्रिया में यदि मन को ढील दी तो वह आसान की जगह कठिन बना देगा।

दृढ़ संकल्प में होती है अद्भुत शक्ति-

दृढ़ संकल्प में अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य होता है। हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक संकल्प में शक्ति होती है लेकिन जब उस संकल्प के साथ दृढ़ता जुड़ जाती है तो वह शक्तिशाली संकल्प बन जाता है। दृढ़ संकल्प यदि महान और श्रेष्ठ है तो उसमें परमात्म ऊर्जा समाहित हो जाती है। आत्मिक शक्ति के साथ परमात्मा की मदद और शक्तियां उसे पूरा करने में सहायक बन जाती हैं। उसके सामने नकारात्मक भाव, भावनाएं, परिस्थितियां और समस्याएं गौण हो जाती हैं। अनुभव कहता है कि परमात्म श्रीमत के आधार पर स्व उन्नति या विश्व कल्याण सेवार्थ किए गए बड़े से बड़े महान लक्ष्य को पूरा करने की जिम्मेदारी परमात्मा निभाता है। हमें जरूरत है तो उस लक्ष्य के प्रति अडिग रहकर एकरस अवस्था, एकाग्रता, एकात्म के साथ जुटे रहने की। भाव यही है कि सख्ती ही शक्ति का आधार है।

जीवन प्रबंधन

ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर, ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम

सफलता अर्थात श्रेष्ठ और सुंदर संस्कार

श्रेष्ठ संकल्प तो जीवन जीने का नजरिया ही बदल देता है

आपको सबका सहयोग मिलता है क्योंकि आप सबको सहयोग देते हैं दुआएं देते हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

परमात्मा कहते हैं मैं प्यार का सागर हूं तो तुम बच्चे भी मास्टर प्यार के सागर हो। पहले हम क्या कहते थे तेरी प्यार के एक बूंद के प्यासे हम। एक कहना मैं मास्टर प्यार का सागर हूं जैसे ही आत्मा ने ये संकल्प रचना की, रिकॉर्डिंग कौन सी हो गई। मैं मास्टर प्यार का सागर हूं। फीलिंग कौन सी क्रिएट हो जाएगी, कर्म में क्या आएगा लव। दूसरी थॉट क्रिएट करें मैं एक बुदं प्यार का प्यासा हूं, सारा दिन हम सबके पास जाऐगें प्लीज़ मेरे से प्यार से बात करो। भगवान के बच्चे हैं प्यासे कैसे हो सकते हैं। आपका जो कुछ है वह किसका है? आपके बच्चों का है। आपका बच्चा आपके सामने रोज़ खड़े हो के ये नहीं कह सकता मम्मी-पापा आप तो बहुत अच्छे हो, आप तो सर्वगुण संपन्न हो, आप तो बहुत इंटेलीजेंट भी हो, आपके पास तो बहुत कुछ है मैं तो बिल्कुल नीच हूं, पापी हूं, कपटी हूं। कितने दिन सुनेगें आपका बच्चा डेली अपनी गलानीं करता जा रहा है कितने दिन सुनेंगे? बहुत प्यार से कहेगा अपनी भाषा में मम्मी-पापा मुझे तो कुछ नहीं आता मैं तो पढ़ भी नहीं सकता आप तो डॉक्टर हो, मुझे तो कुछ नहीं आता मैं तो फेल होने वाला हूं। कितनी दिन सुनेंगे, क्या बोलेंगे उसको?

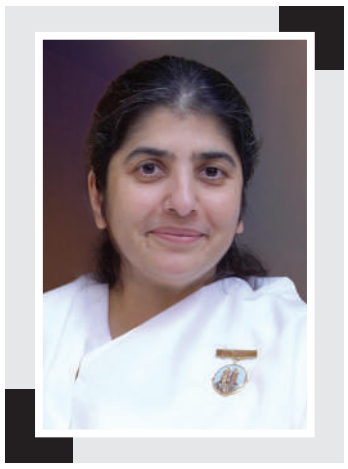

वातावरण शांत रहता है, कनेक्शन जोड़ना इजी हो जाएगा।

सबसे महत्वपूर्ण लाइन आप मेरे बच्चे हो, मेरा जो कुछ है वो आपका है। सोचो रोज़ भगवान के सामने मैं नीच हूं, पापी हूं, कपटी हूं, तेरे चरणों की दास हूं। वो कहता हैं तुम मेरे बच्चे हो। क्या बनना है? जो संकल्प हम क्रिएट करेगें उसे फिल करेगें, रेडिएट करेगें। मैं मास्टर प्यार का सागर हूं, पांच मिनट बैठ गए, बाबा से शक्ति भरी, आज पूरे दिन में जो जो करना है उसको बताया वाइब्रेशन उसकी लेना शुरू कर दिया है, आधा काम हमने सुबह ही कर लिया। किसी से आज मीटिंग हैं, आपको लगता है थोड़ा कुछ गड़बड़ होने वाला, जब वो सो रहा है आप सुबह उठ के उससे बात करो। जब दूसरे लोग सो रहे होते हैं वातावरण शांत रहता है, कनेक्शन जोड़ना इजी हो जाएगा। किसी भी आत्मा को कोई मैसेज देना है, कोई बात समझानी है, वो सोए हुए हैं, आप बैठकर उनको वो मैसेज भेजते जाए। कुछ दिन करना है मैजिक होने लगेगा जीवन में।

लोगों को आगे बढ़ाने का प्रयास करें

सफलता शब्द को भी देखिए। सफलता सफल शब्द से आती है और सफल हम किसको कहते हैं? हम कहते हैं आज का दिन सफल रहा। आप और मैं एक घंटा बाते कर रहें और बातें करके मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो तो मैनें क्या कहना है कि मेरा आज की शाम सफल रही। तो हमारा जीवन सफल हो। किसी के पास बहुत धन हो, समृद्धि हो, बहुत कुछ उन्होंने प्राप्त किया है, बहुत अच्छी बात है लेकिन बस उसे हो तो सफलता नहीं कह सकते ना। उसको हम कह सकते हैं व्यवसाय प्राप्तियां। जैसे एक बच्चा हैं उसने बहुत अच्छे नम्बर पा लिए लेकिन वो अपने दोस्तों से दूर हैं उनको बताता नहीं है कुछ भी जो उसको आता है। अगर उसके नंबर कम आ जाए तो दूसरे बच्चों से उसको घृणा होने लगती है, वो उदास हो जाता है, निराश हो जाता है, बस इस वजह से कि उसके थोड़े से नंबर कम आ गए, क्या इसको सफलता कहेंगे? इसको बस टॉपर कहेंगे। सफलता अर्थात वो बच्चे का मन स्थिर है, अगर दूसरे के नंबर उससे अच्छे आते हैं तो भी वह बहुत ख़ुश होता है, क्योंकि उसका नंबर उसका अस्तित्व नहीं है। हमारा हमारा सैलरी पैकेज, हमारा रोल हमारा अस्तित्व नहीं हैं। अगर किसी को मुझसे ज्यादा मिलता हैं तो उसको देख कर भी मुझे खुशी होती हैं, हम उसको और आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। हम पीछे गिराने का प्रयास नहीं करेगें। जो ऐसा करता हैं क्या उसको सफल व्यक्ति कहेगें।

मन सुकून में तो जीवन सफल...

अपने जीवन में कॉर्पोरेशन से चलेंगे, कॉम्पिटिशन एक रेस की तरह नहीं भागेंगे, की हमें बस औरों से आगे ही जाना है। ये तो जीवन जीने का नजरिया ही बदल देता है। सफलता अर्थात बहुत श्रेष्ठ संस्कार और जब बहुत सुंदर संस्कार होते हैं तो शरीर स्वस्थ होता है, आपके रिश्ते घर पर भी बहुत प्यारे होते हैं, जहां आप काम करते हैं वहां पर भी बहुत प्यारे रिश्ते होते हैं। आपको सबका सहयोग मिलता है क्योंकि आप सबको सहयोग देते हैं दुआएं देते हैं। जिसके कर्म सही हो, जिसके संस्कार श्रेष्ठ हो उसकी व्यवसाय प्राप्तियां कम हो ये हो नहीं सकता है।

ये हो सकता है किसी और की रिफरेन्स में मेरी थोड़ी सी कम हो सकती है, लेकिन मैं हमेशा अपने आप को दूसरों के साथ कंपेयर करती रहूं तो हमेशा मेरे पास कुछ न कुछ कम रहेगा, लेकिन मुझे अपने जीवन को देखना हैं। मन की खुशी, शहर का स्वास्थ्य, परिवार के साथ रिश्ते, लोगों के साथ रिश्ते और मेरा व्यवसायिक प्राप्तियां ये चारों बातें संतुलन में होनी चाहिए। हमारे जीवन में एक पहलू तो बहुत लंबा है हमने तो बहुत कुछ प्राप्त कर लिया लेकिन मन सुकून में नहीं हैं, क्या इस जीवन को सफल जीवन कहेंगे?

राजयोग के प्रयोग से अपने अंदर की नकारात्मकता को समाप्त किया

शख्सियत...

डॉ. अनुपमा सेठी डामा
सीनियर कंसल्टेंट
गंगाराम हॉस्पिटल,
दिल्ली

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

गंगाराम हॉस्पिटल दिल्ली में सीनियर कंसल्टेंट हूं। रूट कैनाल ट्रीटमेंट में स्पेशलाइजेशन है। दो साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हूं और राजयोग ध्यान करती हूं। ओआरसी में आयोजित एक कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के बाद मेरा जीवन में एकदम परिवर्तन आ गया। राजयोग मेडिटेशन कोर्स के बाद बाबा का बच्चा बन गई। पहले तो बस भक्ति किए ही जा रहे थे, जब हर बात को इतना तर्क में एक्सप्लेन कर समझाया गया कि अब उसके बाद सारा कारण समझ आने लगा की हम यह सब क्यों कर रहे थे।

अब राजयोग अभ्यास में परमात्मा पिता शिवबाबा से कनेक्ट होकर सारी शक्तियों को महसूस करती हूं। यह ज्ञान से पहले बहुत टेंशन में कोई भी केस डील करती थी लेकिन अब पेंशट को भी आत्मा समझ कर रूहानी दृष्टि देकर और बाबा की याद में कितना भी उलझा हुआ केस अराम से निपट जाता है लगता है ये कैसे हो गया? जैसे मेरे बच्चों का परीक्षा थी पहले बहुत टेंशन में होती थी लेकिन इधर बड़े सहज रूप में बाबा को याद कर उनके ऊपर सब छोड़ दिया कि बाबा आपको ही सब संभालना है। उसके बाद सबके काफी अच्छे रिज़ल्ट आए। जिससे हम सब का बाबा के प्रति और विश्वास बढ़ता चला गया। मैं अमृतवेला रोज उठती और मुरली पढ़ती हूं।

मैं मधुबन डॉक्टर्स के कॉन्फ्रेंस में आई थी। उसमें मेरे युगल (पति) भी आए थे तो यहां से जाते ही उन्होंने भी सेंटर ज्वाइन कर लिया और अब तो वो भी एक साल से ज्ञान में चल रहे हैं। उनका भी यही कोशिश रहती है कि रोज़ मुरली सुनें। मेरे बच्चों ने भी कोर्स किया है। दोनों बाहर हैं लेकिन एक के पास तो सेंटर नहीं है इसलिए ऑनलाइन मुरली सुनती है और दूसरी वाली ने सेंटर ज्वाइन किया हुआ हैं। अब वो भी कहीं कोई भी काम करने से पहले परमात्मा की याद में सब सौंप कर कहीं निकलते हैं। मैं भी ऑनलाइन सेवा कर रही हूँ जैसे क्लासेस के बीच में प्रोग्राम शुरू होने से पहले मेडिटेशन करना कराना। होस्ट बन के ऑनलाइन क्लासेस करती कराती हूं।

दिन में तीन क्लासेस तो हो ही जाते हैं। बाबा का ज्ञान जितने लोगों को दे सकती हूं कोशिश तो यही है अपने फ्रेंड्स को रिलेटिव को फैमली मेंबर्स को। जिससे मिलो, किसी न किसी तरह उनको बताया जाए। सेंटर में जो भी सेवा करनी होती है जब भी दीदी बोलती हैं और कभी-कभी अपने मन से जा कर सेवा करते हैं और मन से मनसा सेवा और धन से भी सेवा करते हैं। जब भी सेंटर में कोई भी प्रोग्राम होता है, तब डॉक्टर्स लोग मेरे काफी फ्रेंड्स हैं जो मेरे से ऑनलाइन ज्वाइन किया है। ऑनलाईन क्लास में मेरा ड्राइवर, मेड, कुक और मेरे भाईयों के कुछ फ्रेंड्स भी हैं जो साउथ में रहते हैं ये सब लोगों ने ज्वाइन किया है। ऑनलाइन कोर्स तो काफी लोगों ने किया है।

ज्ञान में आने से पहले जो रूटीन था, सब फ्रेंड्स या रिलेटिव के साथ जो भी ऊपर नीचे होता था अब सब नार्मल हो चुका है। एक हमारे परिचित जिनसे इतनी नेगेटिविटी थी मेरी कि क्या बताऊं। तब हमें बताया गया कि आर्ट ऑफ़ फॉरगिवनेस अर्थात कैसे किसी को माफ़ करना है। हमारे मनसा सेवा से उसमें और हमारे में इतना परिवर्तन आया कि हम लोग अब बहुत क्लोज हो गए हैं मित्र बन गए हैं, अब आश्चर्य लगता है कि ये कैसे हो गया? पहले से तो पता था कि कोई सुप्रीम एनर्जी तो है ही लेकिन अब प्रत्यक्ष रूप से मेडिटेशन में महसूस होता है कि मैं आत्मा हूं और मेरे पिता परमात्मा शिव मुझ पर शक्तियां बरसा रहे हैं। मैं अपना एक्सपीरियंस भी सबको बताती हूं कि मेरे कैसे बदलाव आया? पहले क्या थे और अब क्या हैं। मैं उनको ज्ञान के बारे में बताती हूँ, आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में, शिव और शंकर में जो अंतर है तो धीरे-धीरे आत्मा का परिचय कराती हूं।

डॉक्टर्स नहीं जैसे मां अपने बच्चों से दुःख दर्द में बात करती है तो दुःख आधी हो जाती है वैसे पहले रोगियों को याद दिला प्रेम देकर दवा देते हैं तो उसका असर बहुत सार्थक देखने को मिल रहा है। साथ में दुआ, दया भाव रहमदिल वाइब्रेशन से काम करते हैं। अगर हम किसी पेशेंट को ट्रीट कर रहे हैं और वो हमसे संतुष्ट है उसकी बीमारी ठीक हो गई तो वो अपने मुख से और लोगों को बताएगा। मैं महसूस करती हूं कि अपने ऊपर सुरक्षा चक्र है। फैमिली के ऊपर भी सुरक्षा चक्र है। हॉस्पिटल में डिपार्टमेंट में हर जगह यह महसूस करने से ताकत मिलती है।

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 April 2023
■ स्वामी: राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र